जमींदारों ने तीर और बंदूक की लड़ाई शुरू की मगर खान ने उन को हटा दिया तब वह (तीनों थर) के मज़बूत क़िले में जो जंगलों के अंदर है जा घुसा लेकिन ख़ान ने वह क़िला भी फतह कर लिया और क़िलेवाले अपनी औरतों और लड़कों को आग में जला कर लड़े और मारेगये फिर ख़ान ने रस्ता साफ़ करके रतन पुर पर धावा किया बाबू लछमन ने राजा अमर सिंघ की मारफत सुलह चाही ख़ान ने सुंदर कबिराय को जो बादशाह के पास से उस के पास तइनात होकर आया था राजा के आदमियों के साथ बाबू के पास भेजा और आपभी उस के पीछे २ रवाने हुआ सुंदर कबिराय के पहुंचते ही बाबू खान के पास हाज़िर आया ३ हाथी तो उसी वक़्त लाया ९ हाथी और २ लाख रुपे २९ दिन में पेश करना क़बूल करके ख़ान के साथ बादशाह के पास हाज़िर होने का इक़रार किया।

जुझार सिंघ बुंदेले का बाग़ी होना—बादशाह ने जुझार सिंघ के अगले क़सूर सन् २ जलूसी में बख़्श दिये थे तब से वह दक्खन में तईनात था पिछले दिनों में महाबत ख़ां ख़ानख़ानां से रुख़सत लेकर वतन में आगया था और अपने बेटे बिक्रमाजीत को दक्खन में छोड़ आया था यहां उस ने गढे के ज़मींदार पेमनरायण के ऊपर चढ़ाई की और धर्म कर्म देकर पेमनारायण को जोरागढ के किले से जो उस मुल्क की पाट जगह है बाहर बुलाया और फिर सब साथियों समेत जो अकसर उसके भाई बंध थे मारकर जोरागढ के किले और उस में के तमाम माल और ख़ज़ानों पर क़बज़ा कर लिया पेमनरायण का बेटा जिस को मालवे का सूबेदार ख़ानदोरां नज़राने के साथ लाया था दरगाह में हाज़िर था उसने यह सारा हाल बादशाह से अर्ज़ किया बादशाह ने जुझार सिंह को सुंदर कबिराय के हाथ फरमान भेजकर लिखा कि उसने जो बग़ैर हुक्म दरगाह के पेमनाराण और उस के भाई बंदों को मारा है तो अब कुल मुल्क गढे की बादशाही नोकरों के हवाले करदेवे ओर जो अपनी जागीर में चाहिता हो तो उतनो मुल्क अपने वतन के पास का छोड़ दे और १० लाख रुपे पेमनारायण के ख़ज़ानों में से भेज दे इस हुक्म की ख़बर जुझार सिंघ को पहिलेही उस के वकीलों की लिखावट से बड़गई थी इसलिये उसने अपने बेटे बिक्रमाजीत को बुलाया और वह बालाघाट से फ़ोरन चल दिया वहां के सूबेदार ख़ानज़मां ने तो कुछ नहीं किया लेकिन पाईंघाट के सूबेदार ख़ानदोरां ने जुझार सिंघ के भाइयों राजा पहाड़ सिंघ और चंद्रमणि बुंदेला माधोसिंघ हाड़ा राव करण नज़र बहादुर और मीरफ़ैज़ुल्ला वग़ैरा तमाम

देंगे और तब आप को भूतल में बचानेवाला कोई न मिलेगा। उसपर तुलसीदासजी ने उत्तरकांड का ४७।४८।४९।५० का कवित्त बनाया। कोई कोई

मनसबदारों के साथ पीछा किया और ९ दिन में मुकाम आसटा इलाके मालवे के पास बिक्रमाजीत को जालिया लड़ाई हुई जिस्में बिक्रमाजीत ज़ख़मी होकर भागा और जंगल के रस्ते रस्ते धामूनी में अपने बाप से जा मिला मालवे का सूबेदार अल्लावेरदी खां रस्ते में था तो भी उस का पीछा न कर सका और न ख़ानदोरां के साथ हुआ।

बादशाह ने यह ख़बरें सुनकर ३ सरदारों को २० हज़ार फ़ौज से इस मुहिम पर तईनात किया।

१ अबदुल्ला खां फ़ीरोज़ जंग सूबेदार पटना २ सैयद ख़ानजहां ३ ख़ानदोरां जो मालवे में हुक्म का मुन्तज़िर बैठा था।

गज सिंघ का बेटा अमर सिंघ किशन सिंघ भदोरिया, कृपाराम गोड़ अनूपसिंघ का बेटा जयराम, रावरतन हाडा का पोता इंद्रसाल, जगन्नाथ कछवाहे का पोता रूप-सिंघ यह सब ख़ानजहां के साथ दिये गये और अबदुल्ला ख़ां के साथ बांधों को राजा अमर सिंघ चंदमणि बुंदेला और राजा सारंगदेव तईनात किये गये अल्लावेरदी खां को बुरहानपुर जाने का हुक्म पहुंचा मालव की सूबेदारी ख़ानदारां को इनायत हुई और हुक्म हुवा कि रावरतन के बेटे माधो सिंघ हाडा भारत बुंदेले के बेटे राजा देवी सिंघ वग़ैरा मनसबदारों के साथ चंदेरी के रास्ते से बिझोर को जावे और बरसात के गुजरने तक वहीं रहे।

जुझार सिंघ ने इन फ़ौजों के आने में अपनी ख़राबी देखकर ख़ानख़ानां की मारफ़त बादशाह से अरज़ कराई कि जो कोई बादशाही चाकर मेरे पास आवे तो मैं उस के वसीले से अपनी अरज़ मारूज़ करूं बादशाह ने सुंदर कबिराय को भेजकर फ़रमाया कि जो ३० लाख रुपे नक़द और जोरागढ के बदले बेतवां का क़िला नज़र करे तो उस का क़सूर माफ किया जावेगा और फ़ौज के सरदारों को हुक्म दिया कि जबतक सुन्दर कबिराय लोटकर न आवे सब अपनी २ जगह पर थमे रहें और जो जुझार सिंघ हुक्म की तामील न करे तो ओंडछा फ़तह करके उस की हकूमत और कौम बुंदेले की राजगी राजा देवी सिंघ को देदेवें जिस के बाप दादे क़दीम से मालिक थे मगर जहांगीर बादशाह ने अबुलफ़जल को मारडालने के इनाम में बरसिंघ देव को इनायत कर दी थी।

सुंदर कबिराय गया और यह मालूम कर के कि जुझार सिंघ अपने मुल्क माल

कहते हैं कि मनोहरदास कछवाहे ने कहा था कि अकबर बादशाह की प्रशंसा कीजिये न तो बादशाह कष्ट देंगे उसी पर ४७। ४८। ४९। ५० का कवित्त बनाया।

बनारस के राजा से चिढ़कर गो स्वामीजी ने उत्तर कांड का ८५ वां कवित्त बनाया था और उत्तरकांड के १७० कवित्त में भी इन्हीं पर लक्ष्य

किलों, और जंगलों के भरोसे भूका हुआ है पीछा लौट आया तब बादशाह ने तीनों सरदारों को हल्ला करने का हुक्म लिखा दिया और कुल फ़ौज की अफ़सरी के वास्ते शाहज़ादे औरंगजेब को १० हज़ारी ज़ात और १० हज़ार सवारों का मनसब देकर आसोज बदी २ को रवाने किया उस के साथियों में राजा बिट्ठल दास गौड़ राजा राय सिंघ महाराजा भीम का बेटा गोकल दास सीसोदिया और महेस राठौड़ थे।

सुंदर कविराय ने अपने ग्रंथ सुंदरशृंगार में लिखा है।

दोहा—नगरु आगरो बसतु है, यमुनातट शुभ थानु।
तहां बादशाही करैं, बैठे शाहिजहानु ॥ १ ॥
शाहिजहां तिन गुणिन कों, दीने अनगन दान।
तिन मैं सुंदर सुकबि को, कियो बहुत सनमान ॥ २ ॥
नगभूषण गन सब दिये, हय हांथी सिरपाइ।
प्रथम दियो कबिराज पद, बहुरि महाकबिराइ ॥ ३ ॥
बिप्र ग्वालियरनगर को, बासी है कबिराजु।
जासों साहि दया करै, सदा गरीब नेवाजु ॥ ४ ॥
संबत् सोरह से बरस, बीते अट्ठासीति।
कातिक शुदि षष्टी गुरुहिं, रच्यो ग्रंथ करि प्रीति ॥ ५ ॥

नयागुटका हिस्सा २ की टिप्पणी में राजा शिवप्रसाद ने लिखा है। शाहजहां बादशाह के महाकबि ग्वालियरवाले सुंदरदास नागर ब्राह्मण का बनाया कहते हैं इसी सुंदर ने इसमें कहीं लिखा था "सुंदर को पनहीं सुपने" सो रात को सपने में क्या देखता है कि उसके सिरपर "पनहीं" यानी जूतियां पड़रही है! संबेरे उठतेही "कोप" काटकर वहां उस में "रोस" बना दिया।

सवैया—देखति नैन के कोरनि कौं अधरानिहि मैं मुसुकानि को थानो। बोलत बोल सुकंठहि मैं चलतें पगपै न कहूं अहटानो ॥ सुंदर कोपनहीं सपने अरु जो भयो तो मनहीं मैं बिलानो। मै ब्रुधा बसुधाइ सबै पुनि याकी सुधाइ सुधाई सुमानो ॥१॥

है तथा उसी कांड के १७१ कवित्त में "भूप-चोर भूप भए" स्पष्ट इन्हीं को लिखा है। कोई कोई कहते हैं कि बनारस के राजा से चिढ़कर नहीं मुसलमान बादशाह से चिढ़कर बनाये हैं परंतु यह ठीक नहीं। क्योंकि दोहावली में मुसलमान को महामहिपाल कहा है। यथा दोहा। "गोंड गवार नृपाल महि, जमन महामहिपाल। साम न दाम न भेद कलि, केवल दंड कराल ॥ १॥" हां यह अलबता हो सकता है कि ८५ का कवित सब राजाओं पर हो पर १७० के संबंध से ठीक काशीराज पर है। विनयपत्रिका में अपने समय का वर्णन १३९ भजन में है।

१३२। १३३। १३४ कवित्त सीतावट के वर्णन में है। कोई कहते हैं कि जब सीतावट को गये थे तभी गोस्वामीजी ने इन कवित्तों को बनाया था।

१३५। १३६। १३७ कवित्तों को चित्रकूट के वर्णन में ग्रंथकार ने चित्रकूट में ही जाकर बनाया था।

१३८ वां कवित्त माघ मास में प्रयाग में बनाया था।

१३९। १४०। १४१ कवित्त गंगा के वर्णन में है।

१४३। १४४। १४५। १४६। १४७। १४८। १४९। १५०। १५१। १५२। १५३। १५४। १५५। १५६। १५७। १५८ कवित्त शिवजी के वर्णन में है। ये सब कवित्त उस समय बने थे। जब तुलसीदासजी को शिवजी के किसी गण या शिवोपासक से कष्ट पहुंचा था।

१५९। १६०। १६१। १६२। कवित्त उस समय बना जब उन्हें कुछ पीड़ा हुई थी।

१६३। १६४। १६५। १६६। कवित्त काशी में महामारी होने के समय शिवजी की प्रार्थना में बनाये थे।

१६७। १६८। के कवित्त पारवतीजी से प्रार्थना में मरामारी ही होने के समय में बनाये थे।

१६९ कवित्त में महामारी के समय में हनुमानजी से प्रार्थना की थी।

१७० कवित्त में महामारी निवाणार्थ रामचंद्र और हनुमानजी से प्रार्थना की थी।

१७१। १७२। १७३ कवित्त में महामारी निवाणार्थ रामचंद्रजी से प्रार्थन की है।

१७५। कवित्त में रामचंद्र और हनुमानजी से महामारी दूर करने की प्रार्थना की है। इस प्रार्थना को सुनकर रामचंद्र ने कृपा की है उस पर १७७ का कवित्त बनाये।



शैवसर्वस्व ।

अर्थात्

शिवालय, शिवमूर्ति और शिव पूजा की मुख्य
मुख्य बातों का गूढ़ार्थ

जिसे शिव भक्तों के मनोरंजन तथा
सर्व साधारण के हितार्थ

प्रेमदास प्रसिद्ध प्रतापनारायण मिश्र ने

लिखा ।

पटना—"खड्गविलास" प्रेस बांकीपुर ।

साहब प्रसाद सिंह ने छाप कर प्रकाशित किया ।

१८९०.

पहली बार
१००० कापी }

{ दाम चार आना ।

समर्पण

प्यारे भोलानाथ !

तुम्हारा भोलापन तो मूर्तिपर पांव रख के घंटा छोरने वाले चोर को आत्म समर्पक की गति देने इत्यादि से प्रसिद्ध ही था पर हम भी तुम्हें ऐसे ही पागल मिले हैं जो यह जान के भी कि सब कुछ तुम्हारा ही है समर्पण किए बिना नहीं मानते तथा किसी काम के न होने पर भी तुम्हारे कहलाने को मरे जाते हैं यदि इतने पर भी न अपनाओ तो क्या वश है !

कानपूर, श्रावण शुक्ला १४.
श्रीहरिश्चन्द्राब्द ४.

तुम्हारा ही
प्रेमदास ।

नमः श्री हरिश्चन्द्राय।

उपक्रम।

आजकल श्रावण का महीना है, वर्षारितु के कारण भू मण्डल एवं गगन मण्डल एक अपूर्व शोभा धारण कर रहे हैं; जिसे देख के पशु पक्षी नर नारी सभी आनन्दित होते हैं। काम धन्धा बहुत अल्प होने के कारण सब ढंग के लोग अपनी २ रुचि के अनुसार मन बहलाने में लगे हैं, कोई बागों में झूला डाले मित्रों सहित चन्द्रमुखियों के साथ मद माती आखोंसे हरियाली देखने में मग्न है! कोई लंगोट कसे भंग छाने व्यायाम में संलग्न है! कोई भोर सांझ नगर के बाहर की वायु सेवन ही को सुख जानता है! कोई स्वयं तथा ब्राह्मण द्वारा भगवान भूतनाथ के दर्शन पूजनादि में लौकिक और पारलौकिक कल्याण मानता है! संसार में भांति २ के लोग हैं उन की रुची भी न्यारी २ है भक्त भी एक प्रकार के नहीं होते कोई बकुला भक्त हैं अर्थात् दिखाने मात्र के भक्त पर मन जैसे का तैसा! कोई पेटहुआ भक्त हैं अर्थात् यजमान से दक्षिणा मिलनी चाहिए और काम न किया पूजा ही सही! कोई व्यवहारी भक्त हैं अर्थात् 'या महादेव बाबा! भेजना तो छप्पन करोड़ की चौथाई' इन्हीं में वह भी हैं जो संसारी पदार्थ तो नहीं चाहते पर मुक्ति अथवा कैलाश धाम पर मरे धरे हैं! कोई भगत जी हैं जो रास्ते में भी मन्दिर में आंखें सेंकने ही को पूजा की आड़ पकड़ते हैं! पर हम इन भक्ताभासों को

कथा न कह के श्री विश्वनाथ विश्वंभर के सच्चे प्रेमियों की मनोविनोदार्थ कुछ शिवमूर्ति और उन की पूजा पर अपना विचार प्रगट करते हैं।

ईश्वर का नाम शिव है, यह बात वेद * से लेके ग्राम्य-गीतों † तक में प्रसिद्ध है! और मूर्तिपूजन हमारे यहां उस काल से चला आता है जिस का ठीक २ पता भी कोई नहीं लगा सकता! जिस देश में शिल्प विद्या का प्रचार और जहां लोगों के जी में स्नेह एवं सहृदयता का उद्गार होगा वहां मूर्ति पूजा किसी के हटाए नहीं हट सकती! मुहम्मदीय मत जब तक अरब के अशिक्षितों में रहा तभी तक प्रतिमा पूजन से बचा रहा जहां फारस के रसिकों में फैला टभ 'शीया' सम्प्रदाय नियत हो गई! इसी प्रकार ख्रीष्टीय मत जब तक तुरकिस्तान में रहा जहां के प्रेम की यह दशा कि खुद हज़रत ईसा को उन के चुने हुए बारह शिष्यों में से एक शिष्य यहूदाह इस्करोती ने केवल तीस रुपए के लोभ से प्राण ग्राहक शत्रुओं के हाथ सौंप दिया ऐसे देश में मूर्ति पूजा क्या होती जहां साक्षात ही पूजा के लाले पड़े थे! परन्तु रूम में मसीही धर्म को जाते देर न हुई कि महात्मा मसीह की प्रतिकृति पूजने लगी, रोम्यन कैथोलिक मत फैल गया! जब नए मतों की यह दशा है तो हमारे सनातन धर्म में मूर्ति पूजा क्यों न हो? जहां प्रेम की उमंग में

* त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम् शिवतिनं इत्यादि।

† संकर सह देव सेवक सुर लोक इत्यादि।

स्त्रियां तक जीती जला जाती रही हैं ! और शिल्प विद्या धर्म ग्रन्थ (अर्थ वेद) में भरी है ! जहां राजाओं और वीर पुरुषों तक की मूर्ति का आदर है वहां देवाधि देव महादेव की मूर्ति क्यों न पूजें ? यद्यपि आज कल अविद्या के प्रभाव से सब बातों के तत्व के साथ प्रतिमा पूजन का भी तत्व लोग भूल गए हैं पर जिन्हें कुछ भी इधर श्रद्धा है वे इस लेख पर कुछ भी ध्यान देंगे तो कुछ भेद तो अवश्य ही पावेंगे।

यह सब लोग मानते हैं कि ईश्वर निराकार है पर मनुष्य अपनी रुचि और दशा के अनुसार उस के विषय में कल्पना कर लिया करते हैं। जिन मतों में प्रतिमा पूजन का महा महानिषेध है उन के धर्म ग्रंथों * में भी ईश्वर के हाथ पांव नेत्रादि का वर्णन है फिर हमारे पूर्वजों के लेखों का तो कहना ही क्या है; जिन की कल्पना शक्ति के विषय में हम सच्चे अभिमान से कह सकते हैं कि दूसरे देश वालों को वैसी २ बातें समझनी ही कठिन हैं सूझने की तो क्या कथा ! उन की छोटी २ बातों में बड़े २ आशय हैं (यह विषय दूसरी पुस्तक में लिखा गया है) फिर यह तो धर्म का अंग है इसका क्या कहना !

तनिक ध्यान देके देखिए तो विषय कह उठेगा कि हां जिन्हों ने पहिले पहिल यह बातें निकाली थी वे बड़े विद्या ; लोकहितैषिता और सहृदयता में निस्संदेह जगत

* इंजील तथा कुरआन आदि।

भर के बुद्धिमानों के शिरोमणि थे ! शिवालय, शिवमूर्त्ति अथवा शिवार्चन में सामाजिक, शारीरिक एवं आत्मिक उपदेश इतने भरे हुए हैं कि बड़े २ बुद्धिमान बड़े २ ग्रंथ लिख के भी इति श्री नहीं कर सकते हमारी छोटी सी बुद्धि द्वारा यह छोटी सी पुस्तिका तो समुद्र में से जलकण के सदृश भी नहीं है ।

शिवालय की बनावट देखिए तो ऊपर का गुम्बद गोल होता है जिस से चाहे जितना जल बरसे कुछ क्षति नहीं कर सकता इधर बूंद गिरी उधर भूमि पर आई ! वर्षा में बड़े २ घर गिर जाते हैं पर कोई छोटी सी शिवलियां कदाचित बहुत ही कम सुना होगा कि गिरपड़ी इस के अतिरिक्त भूगोल खगोल ग्रह नक्षत्र सब गोल हैं और परमात्मा सब का स्वामी सब में व्याप्त है यह बात भी शिवमंदिर में उपदिष्ट होती हैं । उस में चारों ओर द्वार होते हैं जिन से सदा स्वच्छ वायु का गमनागमन रहने से रोगोत्पत्ति की संभावना नहीं रहती ऊपर से यह भी ज्ञात होता है कि परमेश्वर के पास जाने को किसी ओर से रोक नहीं है सब मार्गों से वह हमें मिल सकते हैं ! हिंदूधर्म, जयनधर्म, क्रिस्तानी धर्म, मुसलमानी धर्म सब के द्वारा हमारा प्रभु हमें मिल सकता है "रुची नांवै चित्र्यादृजु कुटिल नाना पथ जुषां नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव" केवल मिलने की इच्छा चाहिए ! आगे चलिए तो पहिले विना धार का धातु अथवा पाषाण निर्मित त्रिशूल देख पड़ेगा जिस के कारण शिवा-

लय पर बिजली गिरने का कभी भय नहीं रहता। बड़े २ तत्ववेत्ता (फ़िलासफ़र) कहते हैं कि जिस मकान के पास लोहे कांसे आदि की लंबी छड़ गड़ी होगी उस पर बिजली नहीं गिर सकती क्योंकि धातुओं की आकर्षण शक्ति से वह सीधी धरती में समा जाती है इस से घर की रक्षा रह-ती है पाषाण का त्रिशूल बहुत थोड़े मंदिरों में होते हैं उन में यह गुण तो नहीं है पर यह उपदेश दोनों प्रकार के त्रिशूल देते हैं कि मनुष्य के शरीरक, सामाजिक एवं मानसिक दौर्बल्य जनित भय, सदा डराया करते हैं कि देखो शिव की शरण जाओगे तो तुम्हारे संसारी मित्र तुम्हें पागल समझेंगे! तुम्हारा शरीर और मन विषय सुखों से वंचित रह के दुख उठावेगा! अथवा कायिक,वाचिक,मानसिक कुवासना बड़े २ लालच दिखाया करती हैं कि हमारे साथ रहने में जीवन का साफल्य है नहीं तो और संसार में है ही क्या ? पर यदि तुम इन संकल्प विकल्प जनित भय लालच शंकादि की कुछ भटक न करके आगे को पांव उठाए जाव तो निश्चय हो जायगा कि यह त्रिशूल देखने को मात्र को हैं तुम्हें कुछ बाधा नहीं कर सकते! तुम जब तक शिव के सम्मुख होगे की कटि बद्ध न थे तभी तक भयोत्पादन करने मात्र की शक्ति इन में थी! आगे बढ़िए तो कीर्तिमुख नामक गण की झांकी होगी, (बहुधा शिवालयों में अरघा के पास वा कुछ दूर पर मनुष्य का सा शिर बना रहता है वही कीर्ति मुख हैं) इन के विषय पुराणों में लिखा है कि एक बार क्षुधित हुए

शिवजी से खाने को मांगा तो उन्होंने कहा कि येही क्या रक्खा है अपने ही हाथ पांव खा डालो ! इस पर इन्होंने ऐसा ही किया ! तब से यह भोलानाथ को अत्यंत प्यारे हैं!! इस कथा का गूढोदेश्य यह है कि प्रियतम की आज्ञा से यहां तक मुंह न मोड़ो तो निश्चय है वह कल्याणमय तुम्हें अतिशय प्यार करेगा !!! कीर्तिमुख जी के दर्शन कर के श्री १०८ नागरी दास जी की इस प्रेममय वचन का स्मरण करो तो एक अनिर्वचनीय स्वादु पाओगे मानो स्वयं कीर्तिमुख ही आज्ञा कर रहे हैं कि "सीस काटि आगे धरौ तापर राखौ पांव। इश्क चमन के बीच में ऐसा हो तो आव ॥१॥" और कुछ आगे ही नंदिकेश्वर जी के दर्शन होंगे, जिन्हें लड़के बूढ़े सभी जानते हैं कि महेश्वर जी के वाहन हैं मुख्य गण हैं, उन्हें बहुत प्रिय हैं वरंच ये वही हैं ! यह इस बात का रूपक है कि यदि हम परमेश्वर के अभिन्न मित्र हुवा चाहें तो हमें चाहिए कि अपने मनुष्यत्व का अभिमान यहां तक छोड़ दें कि मानो हम बैल हैं ! पर स्मरण रक्खो बैल बनना सहज नहीं है! अपना पेट घास ही भूसे से भरना पर लोको-पकारार्थ सदा सब रीति से प्रस्तुत रहना ! विशेषतः कृषि-विद्या जो एक समय भारत संपत्ति का मूल थी, (उत्तम खेती मध्यम बान) आज तक प्रसिद्ध है पर समय के फेर से इन दिनों लुप्त सी हो गई है उस के लिए जीवन भर बिता देना बैल ही का काम है ! या यों कहो शंकर स्वामी के परम मित्र का धर्म है ! कठिन परिश्रम कर के दूसरों के लिए सह

वस्त्र उपजाना—कैसा ही बोझ उठाना हो, कैसे ही शीत उष्ण वरषा सह के वन बीहड़ में जाना हो, कभी हिम्मत न हारना—मर जाने पर भी पृथ्वी सींचने को पुर, लोगों की पद रक्षा के लिए जूती, वस्त्राभरण धरने को संदूक कठिन वस्तु जोड़ने को सरेस इन्हीं से प्राप्त होता है यदि हम भी ऐसे ही बन जायें कि अपने दुख सुख की चिंता न कर के संसार के उपकार में धैर्य के साथ श्रम करते रहें ! जगत के हितार्थ कहीं जाना हो कुछ ही करना हो कभी हिचिर मिचिर न करें ! वह आचरण रक्खें कि हमारे मरणानंतर भी हमारे किए हुए कामों तथा लिखे हुए वचनों से पृथ्वी के लोगों के हृदय प्रेम जल से सिंचित हों, लोग स्वदेशोन्नति के पथावलंबन में सहारा पावें, देश भाई अपनी श्रद्धा रूपी पूंजी का आधार बनावें, तथा पाषाण सदृश चित्त वाले भी आपस का मेल सीखें बस तभी हम विश्वनाथ के प्यारे होंगे ! तभी वह प्रेमदेव हमारे हृदय में आरूढ़ होगा ! जिसे यह सब बातें स्वीकृत हैं उसे शिवदर्शन दुर्लभ नहीं है यद्यपि शिवमंदिर में गणेश—सूर्य—भैरवादि की प्रतिमा भी कहीं २ देख पड़ती हैं पर उन के मुख्य पार्षद यही हैं दूसरे देवताओं के मंदिर अलग भी बनते हैं अतः उन का वर्णन यहां पर विशेष रूप से आवश्यक नहीं है इस से हमारे पाठकों को शिवदर्शन की ओर झुकना चाहिए पर यदि केवल बुद्धि के नेत्रों से देखिएगा तो पत्थर देखिएगा ! हां यदि प्रेम की आंखें हों तो उस अप्रतिम की प्रतिमा तुम्हारे आगे विद्यमान है !

शिवमूर्ति इस को मन लगा के देखिए यह हमारे प्रेमदेव
भगवान भूतनाथ सब प्रकार से अकथ्य अप्रतर्क्य एवं अचिंत्य
हैं तौभी भक्तजन अपनी रुचि के अनुसार उन का रूप, गुण,
स्वभाव कल्पित कर लेते हैं उन की सभी बातें सत्य हैं अत:
उन के विषय में जो कुछ कहा जाय सब सत्य है! मनुष्य की
भांति वे नाड़ी आदि बंधन से बद्ध नहीं हैं इस से हम उन्हें
निराकार कह सकते हैं और प्रेमचक्षु से अपने मनोमंदिर में
दर्शन कर के साकार भी कह सकते हैं। उनका यथातथ्य
वर्णन कोई नहीं कर सकता तौभी जितना जोकुछ अभी तक
कहा गया है और आगे के मननशील कहेंगे वुह सब शास्त्रार्थ
के आगे निरे बक २ है और विश्वास के आगे मन: शांति
कारक सत्य है !!! महात्मा कबीर ने इस विषय में सच कहा
है कि जैसे कई अंधों के आगे हाथी आवे और कोई उस-
का नाम बता दे तो सब उसे टटोलेंगे—यह तो संभव ही
नहीं है कि मनुष्य के बालक की भांति उसे गोद में लेके
सब जने उस के सब अवयव का ठीक २ बोध करलें एक २
जन केवल एक २ अंग टटोल सकता है और दांत टटोलने
वाला हाथी को खूंटी के समान—कान छूनेवाला सूप के
सदृश—पांव स्पर्श करनेवाला खंभे की नाईं कहेगा यद्यपि
हाथी न खूंटे के समान है न खंभे के समान पर कहनेवाले
की बात झूठ भी नहीं है उसने भली भांति निश्चय किया
है और वास्तव में हाथी का एक २ अंग वैसाही है भी।

ईश्वर के विषय में मानवी बुद्धि की भी ठीक यही दशा है! हम पूरा २ वर्णन कर लें तो वुह अनंत कैसे? और यदि निरा अनंत मान के हम अपने मन बचन को उन की ओर से फेर लें तो हम आस्तिक कैसे? सिद्धांत यह कि हमारी बुद्धि जहां तक है वहां तक उनकी स्तुति प्रार्थना ध्यान उपासना कर सकते हैं और इसी से हम शांति लाभ करेंगे! उन के साथ जिस प्रकार से जितना संबंध रख सकें उतनाही हमारे मन, बुद्धि, आत्मा, संसार, परमार्थ के लिए मंगल है! जो लोग केवल जगत के दिखाने तथा सामाजिक नियम निभाने को इस विषय में कुछ करते हैं वे व्यर्थ समय न बिताएँ जितनी देर पूजा पाठ करते हैं उतनी देर कमाने खाने पढ़ने गुनने में रहें तो उत्तम है! और जो केवल शास्त्रार्थी आस्तिक हैं वे भी व्यर्थ ईश्वर को पिता बना के माता को कलंक लगाते हैं! माता कहके बिचारे बाप को दोषी ठहराते हैं साकार कल्पना करके व्यापकता और निराकार कह के उसके अस्तित्व का लोप करते हैं! हमारा यह लेख केवल उन के लिए है जो अपनी विचार शक्ति को काम में लाते हैं, और जगदीश्वर के साथ जीवित संबंध रख के हृदय में आनंद पाते हैं; तथा आप लाभकारक बातों को समझ के दूसरों को समझाते भी हैं।

प्रियवर उसकी सब बातें अनंत हैं अतः मूर्तियां भी अनंत प्रकार की बन सकती हैं पर हमारी बुद्धि अनंत नहीं है इस से कुछ रीति की प्रतिमाओं का वर्णन करते हैं। यह

भी सब जानते हैं कि अनंत की एक२ प्रति कृति का एक२ अंग भी अनंत भाव अनंत भलाई अनंत सुख से भरा होना चाहिए पर हम अनंत नहीं हैं इस से थोड़ी ही सी बातों पर लेख को अंत करेंगे।

मूर्ति बहुधा पाषाण की होती है इस का यह भाव है कि उन से हमारा दृढ़ संबन्ध है! (दृढ़ पदार्थों की उपमा पाषाण से दी जाती है) हमारे विश्वास की नेव पत्थर पर है! हमारा धर्म प्रस्थर का है! ऐसा नहीं है कि सहज में और का और हो जाय! बड़ा सुभीता यह भी है कि एक बेर प्रतिमा पधराय दीं कई पीढ़ियों को छुट्टी हुई, चाहे जैसे असावधान पूजक आवें कुछ हानि नहीं हो सकती।

धातु विग्रह का यह तात्पर्य है कि हमारा प्रभु द्रवण शील अर्थात् दयामय हैं! जहां हमारे हृदय में प्रेमाग्नि धधकी वहीं वुह हम पर पिघल उठे। यदि हम सच्चे सदोष हैं तो वह हमारी दशा के अनुसार हमारे साथ बर्ताव करेंगे! यह नहीं कि ईश्वर अपने नियम पालन से काम रखता है कोई मरे चाहे जिए!

रतनमयी प्रतिकृतिका यह अर्थ है कि हमारा ईश्वरीय संबंध अमूल्य है! जैसे पन्ना पुखराज आदि की मूर्ति विना एक गृहस्थी भर का धन लगाए हाथ नहीं आती यह बड़े अमीर का साध्य है वैसेही प्रेम स्वरूप परमात्मा भी हम को तभी मिलेंगे जब हम ज्ञानाज्ञान का सारा अभिमान खोदें! यह भी बड़े ही मनुष्य का काम है।

मृत्तिकामयी प्रतिमा का प्रयोजन है कि उन को सेवा हम सब ठौर कर सकते हैं जैसे मट्टी और जल का अभाव कहीं नहीं हैं ऐसे ही उन का वियोग भी कहीं नहीं है ! धन और गुण का भी उन के मिलने में काम नहीं है ! वे निरधनों के धन हैं ! जिसे जीवनयात्रा का कोई सहारा नहीं वुह मट्टी बेंच के पेट पाल सकता है योंही जिसे कहीं गति नहीं उस के सहायक कैलाशवासी हैं ! सब पदार्थ का आदि मध्यावसान ईश्वर के सहारे है इस बात का दृष्टांत भी मृतिका ही पर खूब घटता है इस के अतिरिक्त पार्थिवे-श्वर का बनना भी बहुत सहज है लड़के भी माटी साग के निर्मान कर लेते हैं यह इस बात की सूचना है 'हुनर-मंदों से पूछे जाते हैं बां बेहुनर पहिले' !

गोबर का स्वरूप यह प्रगट करता है कि ईश्वर आत्मिक रोगों का नाशक है ! हृदय मंदिर की कुवासना रूपी दुर्गंध वही दूर करता है।

पारदेश्वर (पारे की मूर्ति) यह प्रकाश करती हैं कि परमेश्वर हमारे पुष्टिकारक हैं 'सुगंधम्पुष्टि वर्द्धनं' वेद वाक्य है'।

यदि मूर्ति बनाने बनवाने की सामर्थ्य न हो तो पृथिवी जल आदि अष्टमूर्ति बनी बना ईविद्यमान हैं ! वास्तविकप्रेम मूर्ति मन के मंदिर में है ही पर तौभी यह दृश्य मूर्तियां भी निरर्थक नहीं है ! इन के कल्पना करनेवालों की विद्या और बुद्धि प्रतिमानिंदकों से अधिकही थी ! मूर्तियों के रंग भी

यद्यपि अनेक होते हैं पर मुख्य रंग तीन ही हैं ? श्वेत२ रक्त ३ श्याम और सब इन्हीं का विकार हैं इस से इन्हीं का वर्णन आवश्यक है उस में—

पहिले श्वेत रंग की प्रतिमा से यह सूचित होता है कि परमेश्वर शुद्ध एवं स्वच्छ है ' शुद्धमपापविद्धं ' उसकी किसी बात में किसी का कुछ मेल नहीं है वुह ' वहेदहूला शरीक ' है पर सभी उस के आश्रित हैं जैसे उजला रंग सब रंगों का आश्रय है वैसेही सब का आश्रय परब्रह्म है ! सर्वैरमाद्य भावाद्य तरंगा इव बारिधौ। उत्पद्यंते वीलियंते यत्र सः प्रेम संज्ञकः' वुह त्रिगुणातीत तो हई पर त्रिगुणात्मय भी उसके बिना कोईनहीं है औ यदि उसे सतोगुणमय भी कहें (सतोगुण श्वेत है) तो कोई बेअदबी नहीं है !

दूसरा लाल रंग रजोगुण का द्योतक है यह कौन कह सकता है कि यह संसार भर का ऐश्वर्य किसी अन्य का है कविता के आचार्यों ने अनुराग का भी अरुण वरण वर्णन किया है फिर अनुराग देवका रंग और क्या होगा ? काले रंग का तात्पर्य सभी सोच सकते हैं कि सब से पक्का यही है ! इसपर दूसरा रंग नहीं चढ़ता ! योंही प्रेम देव सब से अधिक पक्के हैं उन पर दूसरे का रंग क्या जमेगा ? इस के सिवा दृश्यमान जगत के प्रदर्शक नेत्र हैं उन की पुतली काली होती है ! भीतर का प्रकाश का प्रज्ञान है उस की प्रकाशिनीविद्या है जिसकी सारी पुस्तकें कालीही स्याही से लिखी जाती हैं ! फिर कहिए जिसे भीतर बाहर का

प्रकाश है ! जो प्रेमियों को आंख की पुतली से भी प्यारा है; जो अनंत विश्वामय है 'सर्व्वेवेदायत्रचैकीभवंति' उस का और कौन रंग मानें ? हमारे रसिक पाठक जानते हैं किसी सुन्दर व्यक्ति के नयन में काजल और गोरे गालों पर तिल कैसा भलालगता है कि कवियों की पूरी शक्ति और रसज्ञों का सर्वस्व एक बार उस छबि पर निछावर हो जाता है; फिर कहिए सर्व शोभामय परमसुन्दर का कौन रंग कल्पना कीजिएगा ? समस्त शरीर में सर्व्वोपरि शिर है उस पर केश कैसे होते हैं ? फिर सर्व्वोत्कृष्टमईश्वर का और क्या रंग होगा ? यदि कोई लाखों योजन का बहुत बड़ा मैदान हो, और रात को उस का अन्त लिया चाहो तो सौ दो सौ दीपक जलाओगे, पर क्या उन से उस स्थल की छोरदेख लोगे ? नहीं, जहां तक दीपों का प्रकाश है वहीं तक कुछ सूझेगा फिर बस 'तमासा गूढ़मग्ने' ऐसेही हमारे बड़े २ महर्षियों की बुद्धि जिसका भेद नहीं प्रकाश कर सकती उसे अप्रकाशवत् न मानें तो क्या मानें ? श्रीरामचन्द्र कृष्ण चन्द्रादि को यदि अंगरेजी जमानेवाले ईश्वर न भी मानें तौभी यह मानना पड़ेगा कि हमारी अपेक्षा उन से और ईश्वर से अधिक संबन्ध था फिर हम क्यों न कहें कि यदि उस परात्पर का कुछ अस्तित्व है तो रंग यही होगा क्योंकि उसके निज के लोग कई एक इसी रंग ढंग के हैं अब आकारों का विचार कीजिए तो अधिकत: शिवमूर्त्ति लिंगाकार होती है जिस में हाथ पांव मुख नेत्र कुछ नहीं होते; सब

मूर्त्तिपूजक कहते हैं कि हम प्रतिमा को स्वयं ब्रह्म नहीं मानते न यही मानते हैं कि यह उस की यथातथ्य प्रकृति है; केवल परम देव की सेवा करने तथा अपना मन लगाने के लिए एक संकेत तथा चिन्ह नियत करलेते हैं यह बात आदि में शैवों के ही घर से निकली है क्योंकि लिंग शब्द का अर्थ ही चिन्ह है! और सच भी यही है जो वस्तु बाहरी नेत्रों से देखी नहीं जाती उसकी ठीक २ मूर्त्ति ही क्या? आनंद की कैसी मूर्ति, दु:ख की कैसी मूर्ति, राग रागिनियों की कैसी मूर्ति? केवल मन: कल्पना द्वारा उस के गुणों का कुछ२ द्योतन करने के योग्य कोई संकेत; बस ठीक इसी प्रकार ज्योतिर्लिंग है! सृष्टिकर्तृत्व, अचिंत्यत्व, अप्रतिमत्वादि कई बातें लिंगाकार मूर्ति से ज्ञात होती हैं! ईश्वर कैसा है यह बात पूर्णरूप से कोई नहीं कह सकता! अर्थात् उस की सभी बातें गोलमाल हैं; बस यही बात गोल मटोल ठीक मूर्ति भी सूचित करती है! यदि 'नतस्य प्रतिमास्ति' इस वेद वचन का यही अर्थ है कि ईश्वर के प्रतिमा नहीं है तो इस का ठीक रूप के शिवलिंग ही है क्योंकि जिस्में हस्त पादादि कुछ नहीं हैं उसे प्रतिमा कौन कहेगा! पर यदि कोई मोटी बुद्धि वाला कहे कि यदि कुछ अवयव ही नहीं है तो यही क्यों नहीं कहते कि कुछ नहीं ही है! तो हम उत्तर दे सकते हैं कि आंखें हों तो देखो फिर अर्म से कहना कि कुछ है अथवा नहीं है! तात्पर्य यह है कि 'कुछ है' एवं 'कुछ नहीं है' यह दोनों बातें ईश्वर के विषय में न हां कही

जासकें न नहीं कहते बनें और हां कहना भी ठीक है तथा नहीं कहना भी ठीक है 'का कहिए कहते न बने कछु है कि नहीं कछु है न न नहीं है' क्योंकि ईश्वर तो मन बचनादिका विषय ही नहीं है वहां केवल अनुभव का काम है इसी भांति शिव मूर्ति भी समझ लीजिए कुछ नहीं है तो भी सभी कुछ है! वास्तव में यह विषय ऐसा है कि जितना सोचा समझा कहा जाय उतनाही बढ़ता जायगा, बकनेवाला जन्मभर बके पर सुननेवाला यही जानेगा कि अभी श्री गणेशायनमः हुई है! इसी से महात्मा लोग कह गए हैं कि 'ईश्वर को बाद में न ढूंढ़ो बरंच विश्वास में' इसलिए हम भी उत्तम समझते हैं कि सावयव मूर्तियों के वर्णन की ओर झुकें! क्योंकि यदि पाठकगण विश्वास साथ भजन करेंगे तो आप उस रूप का अरूप समझने लगेंगे हम रूपवान के उपासक हैं हमें अरूप से क्या! हमारे लिए तो उन्हें भी रूप धारण करना पड़ता है!

जानना चाहिए कि जो जैसा होता है उस की कल्पना भी वैसीही होती है! यह संसार का स्वाभाविक धर्म है! जो वस्तु हमारे आस पास हैं उन्हीं पर हमारी बुद्धि दौड़ती है! फ़ारस अरब और इंगलिस्तान के कवि जब संसार की अनित्यता का वर्णन करने लगेंगे तब क़बरिस्तान का नक़शा खींचेंगे क्योंकि उनके यहां स्मशान होते ही नहीं हैं वे यह न कहें तो क्या कहें कि (कि बड़े २ बादशाह ख़ाक में दबे पड़े हैं यदि क़ब्र का तख़ता उठाकर

देखा जाय तो शायद दो चार हड्डियां निकलेंगी जिनपर यह नहीं लिखा कि यह सिकंदर की हड्डी है यह दारा की इत्यादि) हमारे यहां उक्त विषय में स्मशान का वर्णन होगा (शिर पीड़ा जिन को नहीं हेरी । करत कपाल क्रिया तिन केरी ॥ फूल बोझहू जिन न सं भारे । तिन पर बोझ काठ बहु डारे ॥ इत्यादि) क्योंकि क़ब्रों की चाल यहां विदेशियों की चलाई है । यूरोप में सुन्दरता वर्णन करेंगे तो अलकावली का रंग काला कभी न कहेंगे और हिंदुस्तान में ताम्र वर्ण के केश सुन्दर न समझे जांयगे ! ऐसे ही सब बातों में समझ लीजिए तब जान जाइएगा कि ईश्वर के विषय में बुद्धि दौड़ानेवाले सदा सब ठौर मनुष्य ही हैं । अतः सब कहीं उसके स्वरूप की कल्पना मनुष्य के स्वरूप के समान की गई है । क्रिस्तानों और मुसलमानों के यहां भी कहीं २ खुदा के दहिने तथा बाएं हाथ का वर्णन है ! बरंच यह खुला हुवा लिखा है कि उसने आदम को अपनी सूरत में बनाया ! पादड़ी साहब तथा मौलवी साहब चाहे जैसी उलट फेर की बातें कहें पर इस का यह भाव कहीं न जायगा कि अगर खुदा की कोई शकल है तो आदम ही की सी शक्ल होगी ! हो चाहे जैसा पर हम यदि ईश्वर को अपना आत्मीय मानेंगे तो अवश्य ऐसा ही मानना पड़ेगा जैसों से प्रत्यक्ष में हमारा संबंध है ! हमारे माता पिता भाई बहिन राजा रानी गुरू गुरुपत्नी इत्यादि जिन को हम अपने प्रेम प्रतिष्ठा का आधार मानते हैं उन

सब के हमारी ही भांति हाथ पांव इत्यादि हैं तो हमारा सर्वोत्कृष्ठ वंधु कैसा होगा ? बस इसी मूल पर सब सावयव मूर्तियां मनुष्य के से रूप की बनाई जाती हैं ! विष्णुदेव की सुंदर सौम्य प्रतिमा प्रेमोत्पादनार्थ हैं क्योंकि खूबसूरती पर चित्त अधिक लगता है ! भैरवादि की भयानक प्रतिमा इस सूचना के अर्थ हैं कि हमारा प्रभु हमारे शत्रुओं के हेतु भयकारक है अथवा हम उस की मंगलमयी सृष्टि में विघ्न करेंगे तो वुह कभी उपेक्षा न करेगा ! क्योंकि वुह क्रोधी है ! इसी प्रकार शिवमूर्तियों में भी कई विशेषता हैं जिन के द्वारा हम यह उपकार लाभ कर सकते हैं। शिर पर गंगा होने का यह भाव है कि गंगा हमारे देश की संसार परमार्थ की सर्वस्व हैं ! पापी पुण्यात्मा सब की सुखदायिनी हैं !! भारत के सब संप्रदायों में माननीया हैं !!! (गंगा जी की महिमा अनेक ग्रंथों में वर्णित है ! जल तथा बालुका अनेक रोग नाश करती है ! अनेक नगरों की शोभा अनेक जीवों की पालना इन्हीं पर निर्भर है ! मरने पर माता पिता सब छोड़ देंगे पर गंगा माई अपने में मिला लेंगी इत्यादि अनेक बातें परम प्रसिद्ध हैं अतः इस विषय को यहां बहुत न बढ़ा के आगे चलते हैं) और भगवान भवानी भावन विश्वव्यापी हैं तो विश्वव्यापक की मूर्ति कल्पना में जगत का सर्वोपरि पदार्थ ही शिरस्थानी कहा जा सकता है ! पुराणों में गंगा जी की उत्पत्ति विष्णु भगवान के चरणारविंद से मानी गई है और शिव जी को परम वैष्णव लिखा है उस परम वैष्णवता

की पुष्टि इस से उत्तम और क्या हो सकती है कि यह उन के चरणोदक को शिर पर धारण करें ! योंही विष्णु देव को परम शैव कहा है कथा है कि लक्ष्मीपति सदा सहस्र कमल लेके पार्वतीपति की पूजा किया करते हैं एक दिन एक कमल घट गया तो उन्हों ने यह विचार के कि हमारा नाम पुंडरीकाक्ष है एक नेत्र रूपी पुंडरीक अपने इष्ट देव के पादपद्म पर अर्पण कर दिया ! सच है इस से अधिक शैवता और क्या होगी ! शास्त्रार्थ के लती ऐसे उपाख्यानों पर अनेक कुतर्क कर सकते हैं पर उन का उत्तर हम कभी पुराण प्रतिपादन में देंगे इस स्थल पर केवल इतना ही कहेंगे कि कविता पढ़े बिना ऐसे लेख समझना कोटि जन्म असंभव है ! हां इतना कह सकते हैं कि यह भगवान वैकुंठ नाथ की शैवता और कैलाशनाथ की वैष्णवता का अलंकारिक वर्णन है ! वास्तव में विष्णु अर्थात् व्यापक एवं शिव अर्थात् कल्याणमय यह दोनों एकही प्रेम स्वरूप के नाम हैं। पर उस का वर्णन पूर्णतया असंभव होने के कारण कुछ २ गुण एकत्र करके दो रूप कल्पना कर लिए गए हैं जिस में कवियों की वाणी को सहारा मिले ! हमारा प्रस्तुत विषय शिव मूर्ति है और वह शैव समाज का आधार है अतः इन अप्रतर्क्य विषयों का दिग्दर्शन मात्र करके अपने शैव भाइयों से पूछा चाहते हैं कि आप भगवान गंगाधर के पूजक होके वैष्णवों के साथ किस बीरते पर द्वेष रख सकते हैं ? यदि धर्म से अधिक मत वाद प्रिय हो तो अपने प्रेमाधार को गंगाधर

अथच परम भागवत कहना छोड़ दीजिए ! नहीं तो सच्चा शैव वही हो सकता है जो वैष्णवमात्र को अपना देवता समझे । जब परम वैष्णव महादेव हैं तो साधारण वैष्णव देव क्यों न होंगे ? इसी प्रकार यह भी समझने की बात है कि गंगाजी परम शक्ति हैं ! इस से शाक्तों के साथ विरोध रखना भी अनुचित है ! यद्यपि हमारी समझ में तो आस्तिक मात्र को किसी से द्वेष रखना पाप है ! क्योंकि सब हमारे जगदीश ही की प्रजा हैं ! इस नाते सभी हमारे बांधव हैं ! विशेषत: शैव समूह को वैष्णव और शाक्त लोगों से विशेष संबन्ध ठहरा अत: इन्हें तो परस्पर महा मित्रता से रहना चाहिए ! और सुनिए गाणपत्य हमारे प्रभु के पुत्र की ही पूजते हैं अत: इन के लिये भी सदा शिव से यही प्रार्थना करनी चाहिए कि 'करहु कृपा शिशु सेवक जानो' सूर्यनारायण शिवशंकर का नेत्रही हैं 'वंदे सूर्य शशांक वन्हि नयनं' फिर क्या नयन शरीर से अलग हैं जो तुम सूर्योपासकों को अपने से भिन्न समझते हो ? भारत का क्या ही सौभाग्य था यदि यह पांचो मत एकता धारण कर के पंच परमेश्वर बनते ! अस्तु अपने२ मत का तत्व समझेंगे तभी सही ! शिवमूर्ति में अकेली गंगा कितनी हितकारिणी हैं इस पर जितना सोचियेगा उतना ही कल्याण है ! अब दूसरी छवि देखिए ।

बहुत सी मूर्तियों के पांच मुख होते हैं जिस से यह जान पड़ता है कि यावत् संसार और परमार्थ का तत्व तो

आप चार वेदों में पाइएगा पर यह मत समझिए कि वेद विद्या ही से उनका दर्शन भी मिल जायगा ! जो कुछ चार वेद बतलाते हैं उस से भी उन का रूप गुण अधिक है ! वेद उन की वाणी है पर चार पुस्तकों ही पर उन की वाणी समाप्त नहीं हो गई ! एक मुख और है एवं वुह सब के ऊपर है ! जिस की मधुर वाणी केवल प्रेमी सुनते हैं ! विद्याभिमानी जन बहुत होगा चार वेद द्वारा चार फल (अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष) प्राप्त कर लेंगे ! पर वुह पंचम मुख संबंधी सुख औरों के लिए है ! जिसने चारों ओर से अपना मुख फेर लिया है वही प्रेममय मुख का दर्शन पाता है ।

तीन नेत्र से यह अभिप्राय है कि वह त्रैलोक्य एवं त्रिकाल के लोगों के त्रिगुणात्मक (सात्विक राजस तामस) तीनों प्रकार के (कायिक वाचक मानसिक) भावों को देखते हैं ! सूर्य, चंद्रमा, अग्नि उन के नेत्र हैं अर्थात् उन का बिचार करनेवाले के हृदय में प्रकाश होता है ! उन की आंखों देखने वाले (सर्वथा उन्हीं के आश्रित) को आनंद मिलता है ! शीतलता प्राप्त होती है ! उन के विमुख जला करते हैं ! या यों समझ लो कि वे आंख उठाते ही हमारे पाप ताप शाप दुःख दुर्गुण दुराशा सब को भस्म कर देते हैं ।

उन के मस्तक पर दुइज का चंद्रमा है अर्थात् जो कोई अपने को महा क्षीण अति दीन समझता है 'पाप पीनस्य दीनस्य कृष्ण एव गतिर्मम' जिस के मन वचन से सदा निकला करता है ! वही भगवान की शिरोधार्य है ! 'बंदौं सीताराम पद जिन्हें परम प्रिय खिन्न' !

यही भाव। कपाल माला से भी है जो जीते हुए मृतकवत रहते हैं—अर्थात् अपने जीवन को कुछ समझते ही नहीं! पराए लिए निज प्राण तृणवत समझते हैं! वही लोग उन के गले का हार हैं।

चिता भस्म सदृश अपने को निरा निकम्मा महा अपावन समझो! तो वुह तुम्हें अपना भूषण समझेंगे। जब तुम सच्चे जी से अपने अपने पापों को स्वीकार करलोगे। गद्‌गद् स्वर से कहोगे कि हे प्रभो! हम सर्प हैं! संसार के दिखाने मात्र को ऊपर से चिकने २ कोमल २ बने रहते हैं। पर भीतर (हृदय में) विष (कुवासना) ही भरा है। 'मो सम कौन कुटिल खल कामी। तुम से काह छिपी करुना निधि! सब के अंतरजामी॥ इत्यादि' कहने ही से वुह तुम्हें अपनावेंगे!!! यदि हम को यह अभिमान हो कि हम पूरे नक्षत्र नायक के समान कीर्तिमान हैं! तो संसार को चाहे जैसी चमक दमक दिखा लें! पर हैं वास्तव में कलंकी! हमारा अस्तित्व दिनर क्षीण होने वाला है! ऐसे अहंकारी को भोलानाथ कभी अंगीकार न करेंगे। उन्हें तो वही प्यारा है। वे तो उसी को वृद्धि करेंगे। उसी को निष्कलंक बनावेंगे! जो शशि सम होने पर भी दीनता स्वीकार करे! चंद्रशेखर नाम का यह भी भाव है कि 'चद् आह्लादने' धातु से चंद्र शब्द बनता है और सच्चा सुख प्रेम ही में होता है। एवं नित्य वर्द्धमान, निष्कलंक, अमृत मय होने से द्वितीया के चंद्रमा से प्रेम का सादृश्य भी है इस

से यह अर्थ हुआ कि जिस के गुणों का सर्वोपरि भूषण प्रेम है वही चंद्रमौलि है !!! शिव चिता भस्मधारी हैं इस से उन के उपासक भी भस्म लगाया करते हैं जिस से बहुतेरे डाकटरों के मतानुसार शरीर के अनेक रोग नाश होते हैं ! और बिजली की शक्ति बढ़ती है पर आत्मा को भी यह लाभ होसकता है कि जब २ अपने शरीर को देखेंगे तब २ प्रभु के चिता भस्म लेपन की सुध होगी और चिता का ध्यान होते ही संसार की अनित्यता का स्मरण बना रहेगा ! अगले बुद्धिमानों का बचन है कि 'ईश्वर और मृत्यु को सदा याद रखना चाहिए, ! इस से बहुतेरी बुराइयां छुटी रहती हैं ! इसी भांति रुद्राक्ष एवं बड़े २ बाल भी स्वास्थ्य के लिए उपयोगी हैं पर यह विषय अन्य है अत: केवल वर्णनीय विषय लिखा जाता है ।

शिवमूर्ति के गले में विष की श्यामता का चिन्ह होता है जब समुद्र के मथने के समय महा तीक्ष्ण हलाहल निकला और कोई उसकी भार न सह सका तब आप उसे पान कर गए ! तभी से गरल कंठ कहलाते हैं इस पर श्री पुष्पदंताचार्य ने कितना अच्छा सिद्धांत निकाला है कि 'विकारोपिश्लाघ्यो भुवन भयभंग व्यसनिनां' यहां हम शिव भक्तों से प्रश्न करेंगे कि जब हमारे प्रभु ने जगत की रक्षा के हेतु विष तक पी लिया है तो हमें निज देश के हितार्थ क्या कुछ भी कष्ट अथवा हानि न सहनी चाहिए ?

उन के एक हाथ में त्रिशूल है अर्थात् दैहिक दैविक

भौतिक दुःख उन की मुट्ठी में हैं! फिर उन के भक्त संसार से क्यों न निर्भय रहें! उस सर्व शक्तिमान के पंजे से छूटेंगे तब हम पर चोट करेंगे! भला यह कब सम्भव है? हमारा प्रभु हमारी रक्षा के अर्थ सदा शस्त्र धारण किए रहता है फिर हम क्यों डरें! हमारे विश्वनाथ त्रिशूल प्रहारक हैं अतः हमें कोई निष्कारण सतावैगा वुह कहां बच के जायगा? हमारा या यों कहो कि संसार के शुभचिंतकों का शत्रु पृथिवी स्वर्ग पाताल कहीं न बचेगा! भगवान का नाम ही त्रिपुरारि है अर्थात् त्रैलोक्य के असुर प्रकृति वालों का शत्रु हां प्रिय शैव गण! यदि तुम में कोई भी आसुरी प्रकृति हो स्वार्थ के आगे देश की चिंता न हो! देशी भाइयों से द्वेष हो! आलस्य हो! दंभ हो! पर संताप हो! तो डरो सृष्टि संहारक के त्रिशूल से! और यदि सरलता के साथ उन के चरण और सदाचरण में श्रद्धा है तो समस्त सूल को वे स्वयं प्रहार कर डालेंगे। कभी २ कालचक्र की गति से सच्चे शैव को भी रोग वियोगादि शूल दुख देते हैं पर उसे संसारी लोगों की भांति कष्ट नहीं होता! क्योंकि निश्चय रहता है कि यह प्रेमपात्र का चोचला मात्र है! न जाने किस उमंग में आके त्रिशूल दिखला दिया है पर हम पर चोट कदापि न करेंगे।

दूसरे हाथमें डमरू है पंडित लोग जानते हैं कि व्याकरणादि कई विद्याओं के अइउणऋलृकादि मूल सूत्र इसी डमरू के शब्द से निकले हैं यह इस बात का इशारा है कि

सब विद्या उन की मूठी में हैं ! पर हमारी समझ में एक बात आती है कि यदि वे केवल त्रिशूलधारीही होते तो हम निर्बलों को केवल उन का भय होता इसी लिए एक बाजा भी पास रखते हैं जिस में हमें निश्चय रहै कि निरे न्यायी निरे दुष्ट दमन, निरे युद्ध प्रिय ही नहीं हैं बरंच अपने लोगों के लिए गान रसिक भी हैं ! मनुष्य की मनोवृत्ति गाने बजाने की ओर आप ही खिंच जाती है फिर भला जिसकी ओर चित्त लगाना हमें परमावश्यक है वुह प्रभु हमारे चित्त को अपनी ओर खींच ने के अर्थ गान प्रिय क्यों न हो ! सैकड़ों बार देखा गया है कि कभी २ किसी कारण के बिना भी हमारा मन उन के निकट जा रहता है ; इस का कारण यही है कि उन का रूप गुण स्वभाव हृदयग्राही है ! धन्य है उस पुरुष रत्न का जीवन जिस के मन की आंखों में सदा उन की छवि बसती है, और अंतः करण के करण में नित्य प्रेम डमरू की ध्वनि पूरी रहती है ! संसार में जितने सुहावने शब्द सुनाई देते हैं सब उसी डमरू के शब्द हैं ! क्योंकि सब को उन्हीं के हाथ का सहारा है ।

कोई २ मूर्ति अर्द्धांगी होती है अर्थात् एक ही मूर्ति में एक ओर शिव एक ओर पार्वती देवी ऐसी झांकी से यह अकथ्य महिमा बिदित होती है कि वुह अष्ठ प्रहर अपनी प्यारी को बामांक में धारण करने पर भी योगीश्वर एवं मदनांतक हैं ! क्या यह सामर्थ्य किसी दूसरे को हो सकती है ? हां जिस पर उन्हीं की बिशेष दया हो ! धन्य प्रभो !'

'यह दूध और खटाई की एकत्र स्थिति तुम्हीं कर सकते हो' हमारी कवि समाज के मुकुटमणि गोस्वामी तुलसी दास जी ने जनक महाराज की प्रशंसा में कहा है कि 'योग भोग महं राखेउ गोई । राम विलोकत प्रगटेउ सोई ॥' यदि गोस्वामी महाराज का हम से दैहिक संबंध होता तो उन से एक ऐसी चौपाई अनुरोध पूर्वक बनवाते कि 'योग भोग दोउ प्रगट दिखाई । सूचत अति अतर्क्य प्रभुताई' हमारे कान्यकुब्ज भाई अधिक तर शैव ही हैं परदेश के दुर्भाग्य से ऐसी प्रतिमा देखके यह उपदेश नहीं सीखते कि 'जो हरि सोई राधिका जो शिव सोई शक्ति । जो नारी सोइ पुरुष है यामे कछु न विभक्ति' नहीं तो शैवों का यह परम कर्तव्य है कि अपनी गृहदेवी से इतना स्नेह करें कि 'एक जान दो क़ालिब' बनजायं! और व्यभिचार के समय यह ध्यान रक्खें कि हमारे भोला बाबा ने जिस कामदेव को भस्म कर दिया है यदि हम उसी भस्मावशिष्ट मन्मथ के हरायल बन जायेंगे तो हर भगवान को क्या मुंह दिखावेंगे!!!

कोई २ प्रतिमा वृषभारूढ होती है पर वृषभका वर्णन हम ऊपर कर चुके हैं यहां केवल इतना और कहेंगे कि नंदिकेश्वर ही की प्रीति के वश वे पशुपति अर्थात् पशुओं के पालनेवाले कहाते हैं अतः पशुओं का पालन विशेषतः वृषभ तथा उसकी अर्धांगिनी का पोषण शैवों का परम धर्म है!

शिव मूर्त्ति क्या है और कैसी है यह तो बड़े २ ऋषि भी नहीं कह सकते पर जैसी बहुत सी प्रतिकृति देखने में आती है उनका कुछ २ वर्णन किया गया यद्यपि कोई बड़े बुद्धिमान इस विषय में लिखते तो बहुत सी उत्तमोत्तम बातें निकालतीं पर इतना लिखना भी कुछ तो किसी का हित करेहीगा ! मरने के पीछे कैलाशवास तो विश्वास की बात है हमने न कभी कैलाश देखा है न देखने वाले से भेंट तथा वार्त्तालाप किया है हां यदि होगा तो प्रत्येक मूर्ति पूजक को हो रहेगा ! पर हमारी इस अक्षर मयी मूर्ति के सच्चे सेवकों को संसार ही में कैलास का सुख प्राप्त होगा ! इस में संदेह नहीं है ! क्योंकि जहां शिव हैं वही कैलाश है तो जब हमारे हृदय में शिव होंगे तो हृदय नगर कैलाश क्यों न होगा ? हे विश्वपते ! कभी इस मनोमंदिर में विराजोगे ! कभी वह दिन दिखाओगे कि भारतवासी मात्र तुम्हारे हो जांय और यह पवित्रभूमि कैलाश बने !

जिस प्रकार अन्य धातु पाषाणादि मूर्तियों का नाम श्रीरामनाथ,वैद्यनाथ,आनन्देश्वर,खैरेश्वरादि होता है वैसे इस अक्षरमयी मूर्ति के भी कई नाम हैं हृदयेश्वर,मंगलेश्वर, भारतेश्वर इत्यादि पर मुख्यनाम प्रेमेश्वर है अर्थात् प्रेम मय ईश्वर ! इन का दर्शन भी प्रेमचक्षु के विना दुर्लभ है ! जब अपनी अकर्मण्यता और उनके उपकारों का ध्यान जमेगा तब अवश्य हृदय उमड़ेगा और नेत्रों से अश्रुधारा बह चलेगी ! उसी धारा का नाम प्रेम गंगा है इन्हीं प्रेम गंगा के

जल से स्नान कराने का महात्म्य है ! हृदय कमल चढ़ाने का अक्षय पुण्य है ! यह तो इस मूर्ति की पूजा है जो प्रेम बिना नहीं हो सकती ! पर यह भी स्मरण रखना चाहिए कि जब मन में प्रेम होगा तभी संसार के यावत् मूर्तिमान तथा अमूर्तिमान पदार्थ शिवमूर्ति अर्थात् कल्याण का रूप निश्चित होंगे ! नहीं तो सोने औ हीरे की भी मूर्ति तुच्छ है। यदि उस से स्त्री का गहना बनवाते तो उस की शोभा होती-तुम्हें सुख होता भाईचारे में नाम होता विपत्ति में काम होता पर मूर्ति से तो कुछ भी न होगा ! फिर मृत्तिकादि का क्या कहना है वह तो तुच्छ हई हैं ! केवल प्रेम ही के नाते ईश्वर हैं नहीं तो घर की चक्की से भी गए बीते ! यही नहीं प्रेम के बिना ध्यान ही में क्या ईश्वर दिखाई देगा ? जब चाहो आखें मूंद के अन्धे की नकलकर देखो अंधकार के सिवाय कुछ सूझै तो कहना। बेद पढ़ने से हाथ मुंह दोनों दुखेंगे ! अधिक श्रम करोगे दिमाग मे गरमी चढ़ जायगी। अस्तु ! इन बातों के बढ़ाने से क्या है, जहां तक सहृदयता से विचारिएगा वहां तक यही सिद्ध होगा कि प्रेम के बिना वेद झगड़े की जड़ ! धर्म बे सिर पैर के काम ! स्वर्ग शेखचिल्ली का महल और मुक्ति प्रेत की बहिन है। ईश्वर का तो पताही लगना कठिन है, ब्रह्मशब्दही नपुंसक अर्थात् जड़ है ! उस को उपमा आकाश से दी जाती है 'खम्ब्रह्म' और आकाश है शून्य ! पर हां यदि मनोमंदिर में प्रेम का प्रकाश हो तो सारा संसार शिव मय है क्योंकि प्रेम ही

वास्तविक शिवमूर्ति अर्थात् कल्याण का रूप है। जब शिव मूर्ति समझ में आ जायगी तब यह भी जान जावगे कि उस की पूजा जो जिस रीति से करता है अच्छा ही करता है। पर तौ भी शिवपूजा की प्रचलित पद्धति का अभिप्राय सुन रखिए जिससे जान जाइए कि मूर्तिपूजन कोई पाप नहीं है।

शिवजी की पूजा में सब बातें तो वही हैं जो सब देवताओं की पूजा में होती हैं और सब प्रतिमापूजक समझ सकते हैं कि स्नान चंदन पुष्प धूप दीपादि मंदिर की शोभा और सुगंधि प्रसारण के द्वारा चित्त की प्रसन्नता के लिए हैं जिस में ध्यान करती बेला मन आनंदित रहे क्योंकि मैले कुचैले स्थान में कोई काम करो तो जी से नहीं होता। नैवेद्यादि इसलिए हैं कि हम अपने इष्ट को खाते पीते सोते जागते सदा अपने साथ समझते हैं। स्तुति प्रार्थनादि उन की महिमा और अपनी दीनता का स्मरण दिलाने को हैं पर शिवपूजा में इतनी बातें विशेष हैं एक तो मदार के फूल धतूरे के फल इत्यादि कई एक ऐसे पदार्थ चढ़ाए जाते हैं जो बहुधा किसी काम में नहीं आते इस से यह बात प्रदर्शित होती है कि जिस को कोई न पूछे उसे विश्वनाथ ही स्वीकार करते हैं। अथवा उन की पूजा के लिए ऐसी वस्तुओं की आवश्यकता नहीं है जिन में धन की आवश्यकता हो क्योंकि वे निर्धनों का धन हैं उन्हें केवल सहज में मिलनेवाली वस्तु भेंट कर दो वे बड़े प्रसन्न हो जायँगे क्योंकि अकृत्रिमता उन्हें प्रिय है।

दूसरे बिल्वपत्र चढ़ाने का भाव 'त्रिदलं त्रिगुणाकारं' इत्यादि श्लोक ही से प्रगट है अर्थात् सतोगुण रजोगुण तमोगुण जो हमारी आत्मा के अंग हैं उन को भेंट कर देना ! यहां तक उन से दूर रहना कि उन्हें शिव निर्माल्य बना देना ! जैसी कि भगवान कृष्णचन्द्र की आज्ञा है 'निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन' अर्थात् अपना मन उसी पर निछावर कर देना ! बस यही तो धर्म की परा काष्ठा है !

तीसरे मूर्ति की चढ़ी हुई वस्तु नहीं ली जाती इसका प्रयोजन यह है कि हमारा उनका कुछ व्यवहार तो है नहीं कि लौटा लेने के लिए कोई वस्तु देते हों वे तो हमारे मित्र हैं 'प्राणो मित्रः' और मित्र को कोई वस्तु भेंट करके फेर लेना क्या !

चौथी बात है गाल बजाना जिसका तात्पर्य्य पुराणों में सबने सुना होगा कि दक्ष प्रजापति के यज्ञ में शिव का भाग न देख के जब सती जी ने योगानल में अपनी देह दाह कर दी तब शिव के गणों ने यज्ञ विध्वंस कर डाली और अशिव याजक (दक्ष) का शिर काट के हवन कुंड में स्वाहा कर दिया पीछे से सब देवताओं की रुचि रखने को उस के धड़ में बकरे का शिर लगा के पुनर्जीवन दिया गया और उस ने उसी मुख से स्तुति की इसी के स्मरण में आज तक गलमंदरी बजाई जाती है इस आख्यान में दो उपदेश हैं। एक तो यह कि सती अर्थात् पूजनीया पतिव्रता वही स्त्री है जो अपने प्यारे पति की प्रतिष्ठा के आगे सभी आप तथा

अपनी देह तक की पर्वा न करें ! यही विश्वेश्वर को प्यारी होती हैं ! दूसरे यह कि शिव विमुख होके अपनी दक्षता का अभिमान करनेवाला यज्ञ भी करे तौ भी अनर्थ ही करता है ! वह प्रजा पति ही क्यों न हो पर वास्तव में मृतक है ! पशु है ! वरंच पशु से भी बुरा नर के रूप में बकरा है ! यह तो पुराणोक्त ध्वनि है पर हमारी समझ में यह आता है कि जिन कल्याणकारी हृदय विहारी की महिमा कोई महर्षि भी नहीं गान कर सकते वेद स्वयं नेति २ कहते हैं श्रीपुष्पदंत जी ने जिन की स्तुति में यह परम सत्य वाक्य लिखा है कि—

काजर के गिरि पर्वत को मसि भाजन सर्व समुद्र बनावै ।
लेखनि देवतरून की डारहि कागद भूमिहि को ठहरावै ॥
या विधि सारद क्यों न प्रताप सदा लिखिबे महं बैस वितावै ।
नाथ ! तऊ तुम्हरी महिमा कर कैसेहु ने कहु पार न आवै ॥१॥

उन की स्तुति करने का जो क्षुद्र मानव विचार करे वुह गाल बजाने अर्थात् बेपर की उड़ाने के सिवा क्या करता है ? इसी बात की सूचनार्थ स्तुति के दो एक श्लोक पढ़ के गाल से शब्द किया जाता है कि महाराज ! तुम्हारी स्तुति तो हम क्या कर सकते हैं यों ही कही गाल बजाया करें ! प्रसिद्ध है कि ऐसा करने से भवानी पति बड़े प्रसन्न होते हैं, भला सच्ची बात और युक्ति के साथ कही जायगी तो कौन सहृदय न प्रसन्न होगा ? फिर वे तो सहृदय समाज के आदि-देव (गणेश जी) के भी पिता हैं !

यद्यपि हमारा कोई मत नहीं है क्योंकि हमारे परम गुरू श्री हरिश्चन्द्र ने हमें यह सिखलाया है कि 'मत का अर्थ हैं नहीं' पर जब हम अपने पश्चिमोत्तर देश की ओर देखते हैं तो एक बड़े भारी समूह को शैवही पाते हैं हमारे ब्राह्मण भाई विशेषतः कान्यकुब्ज तिसपर भी षट्कुलस्थ कदाचित सौ में निन्नानबे इसी ओर हैं इधर रहनेवाले गौड़ सारस्वत भी तीन भाग से अधिक शैवही हैं। क्षत्रियों में राजपूत सौ में पांच से अधिक दूसरे मत के न होंगे। खत्री भी फी सैकड़ा दो हो चार हों तो हों। वैश्यों में हमारे धोमर दोसरों की भी यही दशा है। हां अग्रवाल थोड़े होंगे। कायस्थ तो सौ में क्या सहस्र में दो चार होंगे जो शिवोपासक न हों। इस से हमारा यह कहना कदापि झूठ न होगा कि हमारे यहां तीन भाग से अधिक इसी ढरें में चल रहे हैं। वेद में भी यदि कुछ ऋचा विष्णु इत्यादि नामों से स्तवन करती हैं तो बहुत सी ऋचाएं हमारे भोला बाबा ही की गीत गाती हैं। (नमः शंभवायच मयोभवायच नमः शंकरायच मयस्करायच नमः शिवायच शिवतरायच) ऐसा दूसरे नामों से भरा हुवा मंत्र कदाचित कोई ही हो। इस के अतिरिक्त इस मार्ग में अकृतिमता बहुत है। बड़े कट्टर बना चाहो तो नहा के तीन उंगली भस्म में डुबो के माथे पर रगड़ लिया करो न जी चाहे तो यह भी न सही पूजा भी केवल लोटा भर पानी तक से हो सकती है। जिस में निरी अकृतिमता, धोती, नेती, कंठी, माला, कुछ न देखिए

उसी जाम जाइए शैव है ! हमारे बहुत से मित्र आर्यसमाजी हैं बहुतेरे अंगरेजी ढंग के हैं बहुतेरे हमारे ऐसे हैं वे भी कभी लगावेंगे तो त्रिपुंड भी लगावेंगे ! माला या कंठा रुद्राक्ष ही की पहिनैंगे ! फिर हमारी तबीयत क्यों न इस सीधी चाल पर झुके ? क्यों न हमारे मुंह से बेतहाशा निकले बुबुबुबुबुबुबु बोम महादेव कैलाशपती: टन् टन् टन् नेति नेति नेति ।

नहीं करते थे, अक्सर उन की आज्ञाओं को टाल कर लड़ाई भिड़ाई किया करते थे; और सिक्खियनों की खूब खबर लेते थे। इन ही सब कारणों से इन की माजूली का हुक्म आया।—उसी साल औगस्ट में वह इंगलन्ड सिधारे। इनके राज में काउन्सिल के प्रधान मेम्बर बीर्ड साहिब के यत्न से कई एक अच्छे अच्छे काम अमल में आये, जिन में से एक तो यह है कि गुलाम लौन्डियों की खरीद फ़रोख़्त उठा दी गई।

लौर्ड हार्डिंज।

१८४४—१८४७।

लौर्ड हार्डिंज सन १८४४ में यहां आये। ये नामी डिउक औफ़ वेलिंगटन के अधीन वाटरलू की लड़ाई में लड़ाई के काम पर नौकर थे। उस लड़ाई में उनका एक हाथ कट गया था। इसी कारण से यहां के लोगों ने उनका नाम "हथकटे गवर्नर" रक्खा था। ये काम पर नियत होते ही सिक्खों की लड़ाई पर गये।

पंजाब का राजा रनजीत सिंह लिखना पढ़ना कुछ भी नहीं जानता था, परन्तु बड़ा ही बुद्धिमान, समझदार, और चालाक था। हरचंद उसके अधीन इस समय ख़ालसा नाम ८० हज़ार एक से एक हेकड़ सिपाही थे तो भी उसने कभी अंगरेज़ों से बिगड़ने का ख़याल तक नहीं किया। यह उस को पूरा निश्चय था कि किसी न किसी समय अंगरेज़ ही सारे हिन्दुस्तान के निष्कंटक बादशाह होंगे। इसी कारण

से उसने एक बार हिन्दुस्तान के नक़शे में अंगरेज़ी अमलदारी का लाल रंग देख कर कहा था कि "धीरे धीरे तमाम लाल हो जायगा"। सन १८३९ में रनजीत सिंह परलोक को सिधारा। उसके तीन बेटों में से बड़े खड़ग सिंह ने गद्दी पर दो ही चार महीने बैठने के बाद प्राणत्याग किया। उस के मरने ही के दिन उसका बेटा नौनेहाल सिंह भी गिरते हुए फाटक से दब कर मर गया। इस के बाद रनजीत सिंह के मंझले बेटे शेर सिंह ने गद्दी पाई, और बापके प्यारे मन्त्री ध्यान सिंह को अपने काम पर बहाल रक्खा। कुछ दिनों के बाद मन्त्री और राजा में झगड़ा हुआ। मन्त्री ने राजा और उसके बेटे को मार डाला, (१८४३) और फिर आप भी किसी दूसरे से मारा गया। और रनजीत सिंह का छोटा बेटा दिलीपसिंह गद्दी पर बैठा, और ध्यान सिंह का बेटा हीरा सिंह उसका मन्त्री हुआ। दिलीप सिंह की अवस्था इस समय कुल बरस पांच एक की थी। इस लिये उसकी मा चंद्रावती (या झिंदा) राजकाज का इन्तिज़ाम करने लगी। कुछ दिनों के बाद हीरा सिंह अत्याचार करने के कारण मारा गया। सन १८४५ में तेज सिंह सेनापति और रानी का यार लाल सिंह मन्त्री हुआ। ग़रज़ इस समय पंजाब के सारे कारख़ाने बिल्कुल अब्तर ज़ब्तर हो रहे थे।

रनजीत सिंह के मरने के बाद ही उसकी ख़ालसा फ़ौज हाथ बाहर हो गई, किसी का दबाव नहीं मानती थी। सिक्खों के सरदारों ने सोचा कि इस फ़ौज को लड़ाई में न उलझाये रखने से यह देशको तबाह कर डालेगी। इस लिये जब फ़ौज ने अंग-

रेज़ी अमलदारी पर चढ़ाई करने का मंसूबा किया तो उन्हीं ने भी उसका साथ दिया। लौर्ड हार्डिंजने बहुतेरा चाहा कि समझाने बुझानेसे लड़ाई निबट जाये। पर सिक्खोंने न माना। लौर्ड हार्डिञ्ज ने पहले ही से अपने इलाकों के सिवाने पर सतलज नदी और मेरट के बीच फ़ौजें भेज रक्खी थीं। सन. १८४५ की ११वीं डिसेम्बर को सिक्ख सतलज पार उतर कर अंगरेज़ी अमलदारी पर चढ़ आये। हार्डिंज ने लड़ाई का इश्तिहार दे दिया, और आप लड़ाई के मैदान में पहुंचा। सिक्खों ने फ़ीरोज़पुर दखल कर लेना चाहा था, परन्तु वहां से १० कोसके फ़ासले पर मुदकी में अंगरेज़ों ने अपने मोर्चे जमा रक्खे थे। वहीं लड़ाई हुई। अंगरेज़ी सिपाही सर हिऊगफ के अधीन ११००० और सिक्खों की तरफ़ ३०००० थे। तो भी अंगरेज़ों ही ने जय पाई, और शत्रु की १७ तोपें छीन लीं। जलालाबादवाला नामी बहादुर सेल उस दिन की लड़ाई में मारा गया। १८४५—१८वीं डिसेम्बर।

इस के बाद मुदकी और फ़ीरोज़पुर के बीचोंबीच फ़ीरोज़-शहर में ५० हज़ार के लगभग सिक्खों की फ़ौज इकट्ठी हुई—इन के पास प्रायः १०० तोपें थीं। गवर्नर जनरल साहिब वहां लड़ाई के लिये डट गये। सेनापति सिटलर ने फ़ीरोज़-पुर से आकर ५००० सिपाहियों के साथ कुमक पहुंचाई। २१वीं डिसेम्बर को शाम के कुछ पहले लड़ाई शुरू हुई और सारी रात हुआ की। अंगरेज़ी सिपाही मारे जाड़े और भूख के बहुत ही कमज़ोर हो गये थे। अन्तको पौ फटते फटते

गफ़ और हार्डिंज ने बड़ी बहादुरी के साथ लड़ कर शत्रु को फ़ीरोज़शहर से मार हंटाया, और उनकी ७३ तोपें छीन लीं। इस लड़ाई में सिक्खों ने भी खूब बहादुरी दिखलाई—सारी अंगरेज़ी फ़ौज का प्रायः सातवां हिस्सा मारा गया और घायल हुआ। दिन को सिक्खों का सेनापति तेज सिंह एक नई फ़ौज ले कर चढ़ आया, पर शिकस्त खा कर उलटे ही पांव हट गया। अंगरेज़ी सिपाह इस समय इतनी थक कर कमज़ोर हो गई थी, कि शत्रु का पीछा तक न कर सकी। बारे सिक्ख लोग बेखटके सतलज पार उतर गये।

इस के बाद एक महीने के अन्दर ही फिर सिक्खों की फ़ौज सतलज पार उतर कर चढ़ आई—इस दफ़े गुलाब सिंह सेनापति थे। स्मिथ साहिब ने इनसे लड़ने को कूच किया,—परन्तु कुछ फल नहीं निकला—बलकि सिक्खों की तोपों के सामने पड़ कर बहुतेरे सिपाहियों ने जानें खोईं। इस से सिक्खों ने अपने तईं जयी समझा। स्मिथ साहिब ने दूसरी बार सन १८४६ में फिर सिक्खों पर चढ़ाई की और १८वीं जनवरी को अलीवाल के मैदान में उन के खूब दांत खट्टे किये। सोबरायन में फिर एक लड़ाई हुई—उस में स्मिथ और गफ़ दोनों ने मिल कर सिक्खों को फ़ाश शिकस्त दी। इस के बाद अंगरेज़ों ने सतलज पार उतर कर क़सूर में जा के छावनी डाली। और गवर्नर जनरल ने इश्तिहार दिया कि पंजाब सरकारी अमलदारी में मिला लिया जायगा, और वहां के राज का इन्तिज़ाम अंगरेज़ी ज़ाब्ते के मुवाफ़िक़ हुआ करेगा। सिक्खों के सरदारों ने गुलाब सिंह को

मध्यस्थ मान कर सुलह का पयाम भेजा। नीचे लिखे अनुसार सुलहनामा तामील हुआ—

(१) सतलज और व्यासा नदियों के बीच जलन्धर दोआब अंगरेज़ों के अधिकार में रहे। (२) दिलीप सिंह पंजाब का राजा हो, और जब तक यह नाबालिग़ है तब तक एक अंगरेज़ रेसीडेन्ड की सलाह से सल्तनत का इन्तिज़ाम किया जाय। (३) सिक्ख लोग लड़ाई का ख़र्च दें। (४) इस नई सल्तनत की हिफ़ाज़त के लिये लाहौर में एक रिसाला अंगरेज़ी सिपाह का रहा करे। वग़ैरह।—बर वक़्त लड़ाई का ख़र्च अदा करना सिक्खों के लिये मुश्किल हुआ, लाचार उस के बदले उन्हें अंगरेज़ों को कश्मीर का सूबा दे देना पड़ा। अन्त को गुलाब सिंह ने करोड़ रुपयों पर जम्मू का राज ख़रीद लिया। १८४६, डिसेम्बर।

बिलफ़ेल तो इस तौर से सिक्खों की लड़ाई तय पा गई। बहुतेरों का यह ख़याल है कि इस लड़ाई में अंगरेज़ों ने सिक्खों के सरदारों को मिला लिया था, और उन सरदारों की दग़ाबाज़ी से अंगरेज़ों ने जय पाई। परन्तु जो हो इस लड़ाई में जय पाने का हाल सुन कर इंगलैन्ड के अफ़सरों ने बड़ी ख़ुशी ज़ाहिर की, और गवर्नर जनरल और सेनापति दोनों को अच्छे अच्छे इज़्ज़तदार ख़िताब दिये, और सिपाहियों को १२ महीने का भत्ता इनआम दिया।

इस के बाद लौर्ड हार्डिंज ने राज के प्रबंध की तरफ़ ध्यान दिया,—कई एक अच्छे अच्छे काम अमल में आये।

बड़े बड़े शहरों में तिजारत के मालों पर पहिले जो महसूल लगता था, वह उठा दिया गया।

सन १८४८ के शुरू ही में लौर्ड हार्डिंज अपने देस को सिधारे। इन से हर कोई राज़ी और खुश था।

लौर्ड डलहाउसी।

१८४८—१८५६ ई०।

लौर्ड हार्डिंज के बाद लौर्ड डलहाउसी गवर्नर जनरल मुक़र्रर हो कर सन १८४८ के जनवरी महीने में कलकत्ते पहुंचे। डलहाउसी का इरादा तो था कि लड़ाई झगड़ों को निबटा कर देश में अमन आमान और चैन चान की सूरत दिखलायें, परन्तु यह होने न पाया—तुरत ही उन्हें कई एक लड़ाइयों के लिये तत्पर होना पड़ा, जिनमें से मुल्तान की लड़ाई पहली है।

रनजीत सिंह ही के समय से मुल्तान सिक्खों के हाथ में था। सन १८४८ में मूलराज वहां का हाकिम मुक़र्रर हुआ। लाहोर के दरबार से मुल्तान के राज की आमदनी और खर्च का हिसाब किताब तलब किया गया। इस पर मूलराज ने काम छोड़ देने का इरादा प्रगट किया। खान सिंह एक लाहोरी सिक्ख उस की जगह पर नियत हुआ। खान सिंह मुल्तान जाते समय ऐग्निउ और ऐन्डर्सन साहिबों को अपने हमराह लेता गया। मुल्तान में पहुंचते ही मूलराज की साज़िश से ये दोनों अंगरेज़ मारे गये, और

मूलराज खुलमखुला बिगड़ गया। सेनापति हुइस साहिब बहावलपुर के नव्वाब की सहायता लेकर बाग़ियों से खूब लड़ा, मूलराज ने हर जगह शिकस्त खाई, और अन्त को क़िले में भागकर पनाह ली। फिर कई एक लड़ाइयों के बाद उसने अपने तई अंगरेज़ों के हवाले किया और क़ैद कर लिया गया। मुल्तान में रक्षा के लिये कुछ अंगरेज़ी फ़ौज रख दी गई। जनवरी, १८४९।

जिस समय मुल्तान में यह बखेड़ा मचा हुआ था, उसी समय सिक्खों ने अंगरेज़ों को मार डालने और पंजाब से निकाल बाहर करने की कई एक जगहों में साज़िशें कीं। परन्तु भेद खुल गया। और महारानी पर शुबहा होने के कारण वह बनारस भेज दी गई। इस साज़िश के शरीक हज़ारे का हाकिम चतर सिंह और उस का बेटा शेर सिंह भी था। सेनापति गफ़ को जब यह ख़बर मिली, उसने चट उन की तरफ़ कूच किया, और व्यासा के किनारे चेलियानवाला में अपने मोर्चे क़ाइम किये, और वहीं लड़ना शुरू किया। सिक्ख कैसी बहादुरी से लड़ते हैं—और किस फुर्ती के साथ गोले बरसाते हैं उस का मज़ा गफ़ साहिब खूब चखे हुए थे, और इस बार भी उन्हीं ने खूब चखा। इस लड़ाई में अंगरेज़ों के बहुत सिपाही काम आये। इस के बाद सन १८४९ की २१वीं फ़रवरी को गुजरात नाम शहर में फिर एक सख़्त लड़ाई हुई। इस में हुइस वग़ैरह बड़े बड़े सेनापतियों ने, मुल्तान जीत कर, अंगरेज़ों की कुमक पहुंचाई थी। इस लड़ाई में अंगरेज़ जयी हुए। ८वीं मार्च को शेर सिंह सब मुफ़सिदों समेत अंगरेज़ों की सेवा में चला आया।

२८वीं मार्च को दिलीप सिंह ने सुलहनामे पर दस्तख़त कर के पंजाब का राज और विख्यात कोहनूर हीरा अंगरेज़ों के सुपुर्द किया, और आप ५ लाख रुपयों की पेन्शन मुक़र्रर करा ईसाई मज़हब अधिकार कर इंगलैन्ड में जा कर रहने लगा। ऐग्निउ और ऐन्डर्सन के मार डालने के जुर्म में मूलराज सारी ज़िन्दगी के वास्ते कालेपानी भेजा गया। पंजाब का इन्तिज़ाम नियम बहिर्भूत प्रदेश के तौर से एक बोर्ड यानी सभा के अधीन रक्खा गया। इस लड़ाई के ख़तम हो जाने पर डलहाउसी ने एक इज़्ज़तदार ख़िताब पाया। पंजाब की लड़ाई के बाद बरस तीन एक तक हिन्दुस्तान में तमाम अमन रहा।

फिर बर्मावालों से लड़ाई शुरू हुई। सन १८५१ में बर्मावालों पर न मालूम क्या शामत सवार हुई कि उन्हों ने रंगून के सरकारी अंगरेज़ नौकरों पर अपना ज़ोर ज़ुल्म जताना शुरू किया, बलकि एक को पकड़ ले जा कर बहुत ज़लील किया। इस ख़बर को सुन कर गवर्नर जनरल बहुत नीले पीले हुए। पहले तो उन्हों ने एक एल्ची भेज कर लड़ाई का निबटारा कर डालना चाहा, परन्तु जब उन की यह चेष्टा सफल न हुई तो सन १८५२ के एप्रिल महीने में कमोडोर लेम्बर्ट और गौडविन साहिबों के कमान में ख़ुश्की और तरी दोनों राहों से फ़ौजें भेजीं, और दोनों तरफ़ से बर्मा पर चढ़ाई कर के राजा के होश ठंडे कर दिये, और पैगू का सूबा ले कर सुलह कर ली। १८५३। अब वह देश ब्रिटिश बर्मा कहलाता है, और एक कमिश्नर के अधीन है।

बराड़ की राजधानी नागपुर का राजा रघुजी भौंसला (२रा) सन १८५३ में परलोक सिधारा। इसे कोई लड़का बाला नहीं रहने के कारण इस की रानियों ने पोष्य-पुत्र लेना चाहा। परन्तु डलहाउसी ने लेने नहीं दिया, और उसका सर्वस्व छीन कर उस देश की सरकारी अमलदारी में मिला लिया।

अवध अंगरेजों का मित्रराज्य था। सन १८०१ में वेल्स्ली के अमल में नव्वाब सआदतअली से जो औहद श्रो पैमान हुआ था, उसमें एक बात यह भी थी कि राज का प्रबंध अच्छी तरह से हुआ करेगा। परन्तु कुछ दिनों के बाद सल्तनत की बड़ी ही बद-इन्तिज़ामी हुई। इस समय नव्वाब वाजिदअली के अमल में बद-इन्तिज़ामी की और भी उन्नति हुई। इसी कैसरबाग में दिन रात ऐश से काम था, सल्तनत का सिर्फ एक नाम था। सल्तनत की तरफ से नव्वाब की इस बेखबरी के हालों को रेसीडेन्ट स्लिमैन और जेम्स आउटरैम ने बराबर सरकार में लिखा किया। डलहाउसीने इस बारे में इंगलैन्ड लिखा, और वहां से हुक्म आने पर सन १८५६ में अवध को भी सरकारी अमलदारी में मिला लिया। और पेन्शन मुक़र्रर कर के नव्वाब वाजिद-अली को कलकत्ते में नज़रबन्द रक्खा। पंजाब की तरह अवध में भी एक कमिश्नर नियत हुआ।

पंजाब, पैगू, नागपुर, अवध चार चार सूबों के ले लेने पर भी डलहाउसी की अमलदारी बढ़ाने की प्यास नहीं बुझी—उन्हीं ने हैदराबाद के निज़ाम से राइकड़ के दोआब

तेरहवां अध्याय।

लौर्ड कैनिंग।

१८५६—१८६२।

लौर्ड डलहाउसी के बाद लौर्ड कैनिंग हिन्दुस्तान के गवर्नर जनरल हुए, और १८५६ ई० के फ़रवरी महीने में कलकत्ते पहुंचे। १८३७ ई० में ईरानियों ने रूसियों से मिल कर हिरात पर चढ़ाई की थी पर अंगरेज़ों के रोकने से सफल न हुए। इसी कारण वह बराबर अंगरेज़ों से खार खाते थे। रूसी शहनशाह के बहकाने से अंगरेज़ों के साथ उन की अदावत बढ़ते बढ़ते यहां तक बढ़ गई कि अन्त को लड़ाई की नौबत पहुंची। इस लड़ाई पर सर जेम्स आउट्रैम भेजे गये, और इन्हीं ने लड़ कर उन पर जय पाई। १८५७ ई० की ४थी मार्च को सुलह हुई, उस में ईरानियों ने अंगरेज़ों को छेड़ने के लिये पछतावा किया, और हिरात और अफ़ग़ानिस्तान पर जो दावी करते थे उस से बाज़ आये।

इस समय सौदागरी के बारे में कुछ झगड़ा हो जाने के कारण चीनियों ने भी अंगरेज़ों का अपमान किया था। इस का बदला लेने को इंगलैन्ड से फ़ौज के साथ लौर्ड एल्गिन भेजे गये। उन्हों ने लड़ाई में फ़तह हासिल

की, और चीन के बादशाह से मेल करके अंगरेज़ों के लिये सौदागरी के सब अधिकार पाये। यहां पर यह बात इस लिये लिखी गई कि लौर्ड एलिगन चीन जाते वक़्त सिपाहियों को गदर दूर करने के लिये अपनी फौज का कुछ हिस्सा हिन्दुस्तान में भी रखते गये थे।

अब सिपाहियों के गदर का हाल लिखा जाता है।—इस गदर के तीन कारण कहे जाते हैं। (१) १८५६ ई० में सरकार को हुक्म हुआ कि अब सिपाही लोग किसी ख़ास जगह के लिये मुकर्रर नहीं होंगे। अगर ज़रूरत होगी तो क्या दूसरा देश, और क्या समुद्र का पार—तमाम जाना पड़ेगा। जहाज़ पर चढ़ना हिन्दू शास्त्र में मना है, इस लिये इस हुक्म से हिन्दू सिपाहियों के दिलों में नाराज़गी पैदा हुई होगी।—(२) नागपुर, सितारा, झांसी, अवध वगैरह की सल्तनतें छिन जाने के कारण अंगरेज़ों की कारवाइयों पर लोगों को सन्देह होने लगा, और सब को इन की तरफ़ से खटका हो गया।—(३) सारे देश में एक अफ़वाह उस समय यह भी उड़ा कि "गाय और सूअर की चर्बी से एक तरह के टोटे बनते हैं, उन ही टोटों को अब दांतों से काट कर राइफ़ल नाम नई क़िस्म की बन्दूकें भरनी पड़ेंगी, और इसी तरह जात ले कर हिन्दू और मुसल्मान दोनों को क्रिस्तान करने के लिये अंगरेज़ उपाय कर रहे हैं।" सिपाहियों के बिगड़ने के बहुत करके ये ही तीन कारण मालूम होते हैं। पहले पहल बहरमपुर की १८ नम्बर की पल्टन के सिपाही बिगड़े, फिर बराकपुर में

बिगड़ने के लक्षण देखे गये। ये दोनों जगहों के सिपाहियों से हथियार रखवा लिये गये और सब के सब काम से छुड़ा दिये गये।

इस के बाद ही तुरत मेरट में बड़े ज़ोर शोर से ग़दर की आग भड़क उठी। १८५७ की १०वीं जून को कई एक सिपाही, जिन्हों ने उन टोटोंको काटने से इन्कार किया, क़ैद किये गये। इन्हें रिहाई दिलाने के लिये देसी फ़ौजें प्रायः सब की सब बिगड़ बैठीं—वहां के सब ही अंगरेज़ों को उन्होंने नाश कर डाला, शहरको लूट लिया और जला कर ख़ाक कर दिया, और फिर दिल्लीकी तरफ़ कूच किया। दूसरे दिन ११वीं जून को दिल्ली की भी वही गत करके इस शहर को अपने अधिकार में कर लिया। पुरानी राजधानी दिल्ली दख़ल हो जाने की ख़बर सुनकर तमाम के सिपाही बिगड़ गये, और लूट मार करनी शुरू कर दी। फ़ीरोज़पुर, बरेली, कान्हपुर, झांसी, बनारस, इलाहाबाद वग़ैरह तमाम से सिपाहियों के बिगड़ने की ख़बरें आने लगीं। इस समय यह भी प्रगट हुआ कि दिल्ली में मुग़लों के शाही घराने वाले मुहम्मद बहादुर, सितारे की रानी का पोसपूत नाना साहिब, उन के मित्र अज़ीमुल्लाह, अवध की बेगम, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, जगदीसपुर के (ज़िला शाहाबाद) कुंअर सिंह, और दखन का एक अदना मरहटा दूकानदार तांतीया टोपी और दूसरे दूसरे सरदारों ने जो अंगरेज़ी राज से कई एक सबबों से नाराज़ थे, बाग़ियों का साथ दिया है।

नाना साहिब या धुंधुपंत के अधीन बाग़ियों ने ६ठी जून

से २७वीं जून तक लड़कर कान्हपुर अधिकार किया, और बड़े निठुरपन के साथ वहां युरोपियनों के बालबच्चे और स्त्रियां प्रायः सब के सब को मार डाला। फिर सेनापति हैव्लौक और कर्नल नील ने १६वीं जूलाई को लड़कर कान्हपुर उद्धार कर लिया, और बागियों से पूरा बदला लिया।

इस के बाद हैव्लौक ने लखनऊ की तरफ़ कूच किया। सर हेन्री लौरेन्स अब तक उस जगह को बचाये हुए थे। २री जूलाई को गोले के फटने से उन के परलोक सिधारने पर और और अंगरेज़ों ने भी अपनी खूब रक्षा की। फिर हैव्लौक वहां पहुंच के खूब लड़ा, और फिर २५वीं सिप्टेम्बर को लखनऊ अंगरेज़ों के हाथ आया। साहसी कर्नल नील इस लड़ाई में मारा गया।

लखनऊ दखल होने के ५ दिन आगे बागियों की असल जगह दिल्ली भी सेनापति विल्सन की चतुराई से अंगरेज़ों के हाथ आ गई। यहां भी अंगरेज़ों ने सिपाहियों के अत्याचारों का पूरा बदला लिया। कई एक महीनों के बाद दिल्ली के बूढ़े बादशाह मुहम्मद बहादुर बर्मा में शहर-बदर किये गये। वहीं वे मरे।

दिल्ली अधिकार हो जाने के बाद बागियों का ज़ोर और हौंसला घट गया। फिर तो यह दशा हुई कि सिर्फ़ उन के भागने और फांसी पड़ने की ख़बरें आने लगीं। सर कोलिन कैम्बेल ने १८५८ के मार्च में लखनऊ को अच्छी तरह से बेख़ौफ़ और ख़तर कर दिया।

१८५७ साल के औक्टोबर महीने में गौवालियर में गदर

पहुंचने वगैरह के कारणों से सरकार को खर्च की बड़ी दिक़्क़ारी हुई—और इसे दूर करने के लिये कई एक उपाय सोचे गये। अन्त को १८६० सालमें अर्थशास्त्र के जाननेवाले विलसन साहिब हिन्दुस्तान के खज़ांची के तौर पर नियत होके आये। उन्हीं ने ५ बरस के लिये नफे का महसूल (इन्कम टैक्स) क़ाइम किया, और तिजारती के मालों पर भी कुछ कुछ महसूल बढ़ा दिया। इस के बाद लेंग साहिब जब खज़ांची हुए तो इन्हीं ने गवर्नमेंन्ट के "करेन्सी नोट" चलाये, कि जिन के चल जाने से सरकार की आमदनी बहुत बढ़ गई। कुछ रुपये कर्ज़ भी लिये गये। फ़ौज की संख्या घटा दी गई कि जिससे खर्च बहुत ही घट गया। इसी तरह कई एक उपायों से आमदनियों को बढ़ा और खर्चों को घटा सन १८६०-६१ में लेंग साहिब ने दिखला दिया कि सरकार का खर्च और आमदनी दोनों ४१ करोड़ के लगभग है।

जसोर, नदिया, पबना, फरीदपुर, वगैरह कई एक ज़िलों में बहुत दिनों से नील की खेती होती थी। यह खेती अक्सर युरोपियनों ही के द्वारा हुआ करती है। पहले यहां की प्रजा समझती थी कि ये राजा की ज़ात के हैं, इस लिये इन्हें अधिकार भी अधिक है। नीलहे अंगरेज़ कितनों ही उन पर अत्याचार करें ये सह लिया करते थे। अब यह बात सब को मालूम है कि नील की खेती प्रजा की खुशी पर है, और सरकार की तरफ से इस बात के लिये कुछ ज़बरदस्ती नहीं है। बारे बहुतों ने नील का दादन लेना बन्द कर दिया। फिर नीलहों के अत्याचार के समाचार सरकार के कानों

तक पहुंचा, और उस समय के लेफ़्टिनेन्ट गवर्नर ग्रैन्ट साहिब की कोशिशों से नीलहों के सब अत्याचार प्रगट हो गये। सारे बंगाले में एक हलचल मच गई। फिर इस के बाद से कुछ कुछ नीलहों का अत्याचार घटा।

लौर्ड कैनिंग के समय में सन १८६१ में पानी नहीं बरसने के कारण आगरे में अकाल पड़ा था। उसी अकाल के समय उस अतराफ़ की ज़मीनों की मालगुज़ारी अदा करने के बारे में नई किस्म का आईन बनाने का इरादा हुआ। उसी समय में क़ानूनी सभा (लेजिस्लेटिव काउन्सिल) में इस देश के अच्छे अच्छे आदमियों को मेम्बर बनाने की राय हुई, और उसी समय से देसी लोग उस सभा में मेम्बर मुक़र्रर होने लगे। उसी समय से "स्टार औफ़ इन्डिया" (सितारे हिन्द) नाम नया ख़िताब अच्छे अच्छे आदमियों को दिया जाने लगा। मिवराजाओं का पोसपूत लेना जो डलहाउसी ने रोक दिया था इस से उन के दिलों में जो एक उदासी सी छाई हुई थी उसे इस समय लौर्ड कैनिंग ने पोसपूत लेने के हुक्म का इश्तिहार जारी कर के मिटा दिया। इन्हीं सब बातों को तय करके लौर्ड कैनिंग ने सन १८६२ के मार्च महीने में अपने देश की यात्रा की।

लौर्ड एल्गिन।

१८६२—१८६३।

लौर्ड कैनिंग के बाद लौर्ड एल्गिन हिन्दुस्तान के गवर्नर जनरल हुए, और १८६२ के मार्च महीने में कलकत्ते पहुंचे। पहले ये ही लड़ाई के लिये चीन जाते समय ग़दर दूर करने की कुछ फ़ौज कलकत्ते में रखते गये थे। लौर्ड डलहाउसी ही के समय में कलकत्ते की सदर दिवानी और सुप्रिमकोर्ट को मिला कर हाईकोर्ट बनाने का प्रस्ताव किया गया था, परन्तु वह बात अब सन १८६२ में अमल में आई।

इस समय अमेरिका में लड़ाई होने के कारण वहां से इंगलैन्ड को जो रूई जाती थी, वह अब बन्द हो गई। इस से मैन्चेस्टर के सौदागरों को बहुत तक्लीफ़ हुई, और यहां कपड़े आग के भाव बिकने लगे। लौर्ड एल्गिन ने सोचा कि यह आफ़त जब दूर हो कि यहीं रूई खूब पैदा होने लगे। बारे उन्हीं ने इस बारे की बहुत बहुत कोशिशें कीं। उसी समय में खेतीबारी की उन्नति करने के लिये बंगाले के लेफ़्टिनेन्ट गवर्नर बीड्न साहिब ने अलीपुर में अपने मकान पर एक ऐसा मेला जमाने का सामान किया कि जिसमें खेती बारीकी अद्भुत अद्भुत चीज़ें दिखलाई जावें। १८६४ ई० की जनवरी में इस की नुमाइश हुई।

इस समय सिंध नदी के उस पार हिन्दुस्तान के उत्तर पच्छिम सरहद पर सिताना नाम की जगह में फ़साद बरपा हुआ। वहां वहाबी नाम एक क़िस्म के मुसलमानों ने क्या

किया कि वहां के पहाड़ियों को बहका बहका कर उनके साथ अंगरेज़ी अमलदारी में फ़साद मचाना शुरू किया। अंगरेज़ों ने भी उन को सर करने को फ़ौजें भेजीं। लड़ाई हो ही रही थी कि इतने में लौर्ड एल्गिन एकाएक बीमार पड़े और १८६३ साल के नवम्बर महीने में हिमालय की तराई में धर्मशाला नाम जगह में प्राणत्याग किया।

सर जौन लौरेन्स।

१८६४—१८६८।

काबुल की लड़ाई के हाल याद पड़ने से सिताना वाली पहाड़ी क़ौमों की लड़ाई से इंगलैन्ड के अफ़सरों का जी कांप उठा, और चूंकि बलवे के समय सर जौन लौरेन्स ने अपना बल प्रगट किया था, इस कारण इस समय वही योग्य समझे गये, और गवर्नर जनरल बनाये गये। वह १८६४ के जनवरी महीने में कलकत्ते पहुंचे। परन्तु उनके आने के आगे मदरास के गवर्नर डेनिसन साहिब कई एक महीनों तक क़ाइम मुक़ाम गवर्नर जनरल नियत हुए थे। उन ही के समय में सिताना लड़ाई की आग अच्छी तरह बुझ बुझा चुकी थी।

बम्बई में इस समय रूई के रोज़गार में बड़ा नफ़ा था। इसी से बहुतों ने उस रोज़गारमें अपने अपने इतने रुपये फंसा दिये कि चांदी के सिक्के दुष्प्राप्य हो गये। इसी लिये सोने के सिक्के चलाने के लिये प्रस्ताव किया गया पर कई एक कारणों से यह बात होने न पाई।

१८२५ ई० में आसाम जय करने के समय, भूटान के दक्खिन तरफ़ "दुआर" नाम एक संकड़ी राह अंगरेज़ों ने दख़ल कर ली थी। परन्तु इस के बदले में भोटियों को बतौर ख़िराज के कुछ दिया जाता था। पर भोटिये इसे धन्य न समझ कर अंगरेज़ी अमलदारी में आ आ के लूट मार किया करते थे, और इधर के लोगों को क़ैद कर ले जाया करते थे। इस फ़साद के दूर करने को १८६४ साल में ईडन साहिब बतौर एल्ची के वहां भेजे गये। परन्तु जंगली भोटियों पर कमबख़्ती क्या सवार हुई कि इन्हें अपने क़ाबू में पा कर ख़ूब ज़लील और अपने गौं की सुलह कर के ईडन साहिब से ज़बरदस्ती दस्तख़त बनवा लिया। फिर इस के बाद तुरत ही भोटियों से लड़ाई शुरू हुई और बराबर प्रायः दो बरस तक चली। अन्त को लाचार हो कर भोटियों ने सुलह करना मन्जूर किया। सन १८६५ में सुलह हुई—भोटिये दुआर की दावी से बाज़ आये, और अंगरेज़ उन्हें हर साल ५०००० रुपये देने को राज़ी हुए।

सन १८६४ के अक्टोबर महीने में तूफ़ान ऐसे ज़ोर शोर से आया कि प्रायः सारे बंगाल में बड़ी नुक़सानी हुई। पानी नहीं बरसने के कारण से दूसरे बरस उड़ैसे में ऐसा अकाल पड़ा कि क़रीब १० लाख आदमी भूखों मर गये।

राज का इन्तिज़ाम अच्छी तरह नहीं करनेका इल्ज़ाम लगा लौर्ड वीलियम बेण्टिंक ने मैसूर के राजा से राज छीन कर एक अंगरेज़ के सुपुर्द कर दिया था। राजा ने फिर राज पाने के लिये सब ही गवर्नर जनरलों के पास दरख़्वास्त

की थी। पर किसी ने न सुना था। अब राजा ने इस समय फिर पोसपूत लेने की और उसे अपने बाद गद्दी पर बिठाने की दरख़्वास्त की। सन १८६७ में स्टेट सेक्रेटरी नौर्थकोट ने इसे मन्जूर कर के यह हुक्म दिया कि वह लड़का, जो गोद लिया गया है, बालिग होने पर अपना राज्य पायेगा।

हिन्दुस्तान में आइन्दे अकाल न पड़ने पायें, इस लिये सर जौन लौरेन्स ने हर प्रेसिडेन्सियों में तमाम नहरें खुदवाने के बहुत यत्न किये बलकि इस के लिये एक आईन तय्यार कराया, लेकिन खर्च की ज़ेरबारी से ये प्रस्ताव अभी अमल में न लाये गये। सन १८६९ के शुरू ही में लौरेन्स साहिब ने अपने देश को कूच किया, और वहां पहुंच कर इज़्ज़त का ख़िताब पाया।

लौर्ड मेयो।

१८६९—१८७२।

लौर्ड मेयो हिन्दुस्तान के गवर्नर जनरल नियत हो के सन १८६९ के शुरू ही में कलकत्ते पहुंचे। काबुल का बादशाह दोस्तमुहम्मद खां बराबर अंगरेज़ों के कहने में रहा। सन १८६३ में उस के परलोक सिधारने पर तख़्त के लिये एक बड़ी हलचल मची। दोस्तमुहम्मद का इरादा था कि शेरअली नाम अपने बेटे को तख़्त दें, बलकि यही पहले तख़्त पर बैठा भी था। पर इन के बाद यह तख़्त से उतारा गया, लेकिन फिर इसने लड़ कर तख़्त दख़ल कर लिया।

लौर्ड लौरेन्स ने इस में कुछ भी दस्तन्दाज़ी नहीं की, लेकिन लौर्ड मेयो ने देखा कि घर की लड़ाई से मुल्क तबाह हुआ चाहता है अब इस दशा में दस्तन्दाज़ी करना अनुचित नहीं। बारे उन्हीं ने सन १८६९ की २५वीं मार्च को अम्बाले में एक बड़ा दरबार किया, और वहां अमीर शेरअली को बुलाया, और उसे काबुल का बादशाह करार दे कर सालाना १२ लाख रुपयों से और ज़रूरत पड़ने पर हर्बेहथियार से सहायता करने की प्रतिज्ञा की।

लौर्ड मेयो के अमल में सरकारी खर्च से कई एक रेलवे तय्यार कराने की बात चलाई गई। इन ही के समय में बंगाले के लेफ़्टिनेन्ट गवर्नर सर जौर्ज कैम्बेल के कई एक कालिज उठा देने से सब आदमी उन से नाराज़ हो गये थे, और खयाल करते थे कि सरकार को अब प्रजा की "ऊंची शिक्षा" नहीं सुहाती।

मेयो साहिब एक बार अन्डामन का टापू (काला पानी) देखने गये थे। वहीं सन १८७२ की ८वीं फ़रवरी को पोर्ट-ब्लेयर में शेरअली नाम एक मुसल्मान क़ैदी के हाथ मारे गये। उस के मारने का कारण नहीं प्रगट होने पाया। यह तो कहना ही फ़ज़ूल है कि उस दुष्ट ने अपने किये की पूरी सज़ा पाई।

लौर्ड नौर्थब्रूक।

१८७२—१८७६।

लौर्ड मेयो के मरने पर सर चार्ल्स नेपियर ने कई महीनों

तक काम अंजाम दिया, फिर लौर्ड नौर्थब्रूक हिन्दुस्तान के गवर्नर जनरल मुकर्रर हो कर १८७२ के एप्रिल महीने में यहां आये। यह बड़े धनी हैं, इस से बहुतों ने समझा कि इन के यहां आने का उद्देश्य महज़ भलाई ही भलाई होगी। बलकि इन के इन्कम टैक्स उठा देने से हिन्दुस्तानियों की यह आशा और भी लहलहा उठी।

सन १८७२ में पानी के नहीं बरसने से बिहार में अकाल पड़ा। परन्तु सरकार के प्रबंध और ज़मीदारों की सहायता से लोगों ने उतना कष्ट नहीं पाया कि जितना गुमान था।

सन १८७२ में डेंगू नाम एक प्रकार का बुखार सारे हिन्दुस्तान में फैला था। इस से लोगों ने बड़ी तक्लीफ़ उठाई। इस के सिवा हैज़ा आदि कई एक संक्रामक रोग कई एक बरस पहले से हर साल हुआ करते थे।

लौर्ड नौर्थब्रूक के अमल में बड़ोदे के राजा मलहार राव गायकवाड़ का गद्दी पर से उतारा जाना एक प्रधान घटना है। बड़ोदे की रियासत की बदइन्तिज़ामी देख कर गवर्नमेन्ट बहुत दिनों से पांच में पड़ी हुई थी, कि इसके बारे में क्या हो। बलकि गवर्नर जनरल ने एक बार धमका भी दिया कि मलहार राव १८ महीनों के अन्दर होशयार हो जावे और अपने राज का इन्तिज़ाम दुरुस्त करे। इन ही १८ महीनों के अन्दर बड़ोदा राज के रेसीडेन्ट फ़ेयर साहिब ने राजा के नाम पर एक नालिश दागी कि राजा ने उन्हें ज़हर खिलवा देना चाहा था। गवर्नर जनरल ने इस मुकद्दमे का बिचार कई एक देसी राजाओं और कई एक

सरकारी मुलाज़िम अंगरेज़ों के सुपुर्द किया। इन्हीं ने इस मुक़द्दमे की तजवीज़ सन् १८७५ की २६वीं फ़रवरी से ले कर १८वीं मार्च तक चलाई। अन्त को तजवीज़ करने वालों में देसियों ने तो उन्हें निर्दोषी और अंगरेज़ों ने दोषी ठहराया। गवर्नर जनरल ने अंगरेज़ों ही की राय सच्ची समझी, और मलहार रोव को एक बारगी गद्दी से उतार, गायकवाड़ ही घराने के एक दूसरे को गद्दी पर बिठाया। गवर्नर जनरल के इस काम से बहुतेरे लोग नाराज़ हो गये।

लौर्ड मेयो के अमल में महारानी विक्टोरिया के मंझले बेटे डिऊक औफ़ एडिन्बरा इस देश में तशरीफ़ लाये थे। अब लौर्ड नौर्थब्रूक के अमल में महारानी के बड़े बेटे होनहार बादशाह वेल्स के राज-कुमार सन १८७५ की ८वीं नवेम्बर को यहां तशरीफ़ लाये, और सन १८७६ के मार्च में यहां से सिधारे। इन्हीं ने बम्बई, कलकत्ता, पटना, बनारस, इलाहाबाद, लाहौर, कश्मीर, वग़ैरह तमाम सैर की थी।

इधर हिन्दुस्तान में कई एक जगहें सूत कातने और कपड़े बुनने की कलें जारी हुईं। इस से मैन्चेस्टर के सौदागरों को अपने कारबार में झोल पड़ने का खटका हुआ। बारे उन्हों ने यह कोशिश की कि इंगलैन्ड से यहां माल भेजने में जो उन को महसूल लगता है वह उठा दिया जावे। लौर्ड नौर्थब्रूक ने इस का प्रतिवाद किया। बहुतेरे समझते हैं कि इसी बात के लिये इन में और स्टेटसेक्रेटरी लौर्ड सैलिस्बरी से मनमुटाव हो गया, और इसी लिये उन्हों ने इस्तीफ़ा दे सन १८७६ के मार्च महीने में इंगलैन्ड की यात्रा की।

इन के समय में लड़ाई झगड़ा कहीं कुछ नहीं हुआ। सिर्फ़ आसाम की उत्तर सरहद पर रहनेवाली डफला नाम एक जंगली कौम के लोग अंगरेज़ी अमलदारी से आदमियों को पकड़ ले जाया करते थे, इस कारण इन पर, और नागा पहाड़ पर पैमाइश करने के समय हौकम्ब साहिब को मार डालने के कारण नागाओं पर चढ़ाई करनी पड़ी थी। परन्तु इन की गिन्ती लड़ाइयों में नहीं की जा सकती।

लौर्ड लिटन।

१८७६—

लौर्ड लिटन ने सन १८७६ ई० की ११वीं मार्च को लौर्ड नौर्थब्रूक से हिन्दुस्तान के गवर्नर जनरल का काम समझ लिया। इन के समय में इतनी बातें बड़ी बड़ी हो चुकी हैं—(१) महारानी विक्टोरिया ने "एम्प्रेस औफ़ इन्डिया" यानी "क़ैसर-इ-हिन्द" का ख़िताब लेना चाहा। इसी उपलक्ष में बड़ी धूमधाम के साथ लौर्ड लिटन ने सन १८७७ की १ली जनवरी को दिल्ली में दरबार किया। इस में तमाम के राजा महाराजा सरदार आये थे। इस से एक बड़ा उपकार यह हुआ कि इंगलैन्ड और हिन्दुस्तान का नाता बहुत निकट हो गया।—(२) इन के अमल में मंदरास में बड़े ज़ोर शोर से अकाल पड़ा था, परन्तु सरकार के इन्तिज़ाम से प्रजा ने बहुत कष्ट नहीं उठाया।—(३) सौदागर, कारीगर, बैपारी, और हर तरह के पेशेदारों पर ला-

इसेन्स टैक्स बिठाया गया।—(४) देसी बोलियों के अखबारों की स्वाधीनता छीन ली गई। इस काम से हिन्दुस्तान की प्रजा सरकार से बहुत नाराज़ है।—(५) इन के समयमें जितनी बातें हो चुकी हैं उन में सब से प्रधान काबुल की लड़ाई है। अफ़ग़ानिस्तान के बादशाह अमीर शेरअली के दरबार में रूसियों की रसाई का समाचार सुन कर सरकार बहादुर ने भी अपना एक दूत फ़ौजके साथ वहां भेजना चाहा। परन्तु अमीर के नौकरों ने उन को अपने राज में जाने न दिया। यही अपमान इस लड़ाई का कारण है। लड़ाई शुरू हुई, और बराबर छ सात महीने तक चली। अंगरेज़ी फ़ौजोंने जब प्रायः आधा अफ़ग़ानिस्तान ले लिया, और काबुलियोंसे कुछ भी न बन पड़ा, तो शेरअली का जी छूट गया, और शायद इसी खेद में मर भी गया। इनके मरने पर इन का बेटा याकूबखां काबुल के तख़्त पर बैठा। इस ने लड़ाई जारी रक्खी। परन्तु जब देखा कि सरकार से मुक़ाबला कर के फ़रह उठाना मुश्किल है, तो लाचार हो कर सुलह का पयाम भेजा। सरकार को तो सिर्फ़ शेरअली से अपने अपमान का बदला लेना था। बस तुरत ही सरकार ने मन्ज़ूर कर लिया, और तारीख़ २६वीं मे सन १८७९ के दिन गंडामक नाम जगह में नीचे लिखे अनुसार सुलहनामा तअमील हुआ।—

१।—अमीर याकूब खां और अंगरेज़ी सरकार में सदा मित्रता का बर्ताव हो।

२।—अमीर अपनी प्रजा को इस बात की दिलजमई करा दें कि अंगरेज़ी सरकार से सरोकार रखने के कारण उन पर किसी तरह का अत्याचार नहीं होगा।

३।—अमीर याकूब खां अगर दूसरे देशवालों से किसी तरह की गुफ़्तगू करना चाहें तो अंगरेज़ी सरकार की राय ले लेनी होगी।

४।—एक सरकारी रेसीडन्ट थोड़ी सी फौज के साथ काबुल में रहे, जिसे काम पड़ने पर सरकारी एजेन्टों को अफ़ग़ानिस्तान की सरहदों पर भेजने का अधिकार रहेगा। अगर अमीर चाहें तो वह भी अपने एजेन्टों को हिन्दुस्तान में रक्खें।

५।—सरकारी एजेन्टों की जान और आराम की रक्षा याकूबखां के ज़िम्मे रहे।

६,७।—दोनों राज्यों में तिजारत जारी रहे। इस बारे में साल भर के अन्दर एक दूसरा अहदनामा तअमील पायेगा, जिस में खुलासा हाल लिखा जावेगा।

८।—हिन्दुस्तान से काबुल तक, कुरम की राह हो कर, टेलीग्राफ़ के तार लगाये जावें।

९।—क्यों कि दोनों सरकारों में दोस्ताना तौर पर मेल हुआ है, इस लिये अंगरेज़ी सरकार कुरम, पिशीन, और सिबीन की तराइयों के सिवा सब जगहें, जहां जहां इस समय अंगरेज़ी फौज का अधिकार है, याकूबखां को लौटा देगी। इन इलाकों की आमदनी में से राज के प्रबंध का खर्च बाद दे कर जो बचे, वह याकूबखां को दे दिया जावेगा। खैबर और मिचनी घाटियों पर, और इन के आस पास की रहनेवाली कौमों पर भी अंगरेज़ी सरकार को पूरा अधिकार रहेगा।

१०।—याकूबखां अगर इन शर्तों के अनुसार चलें तो

इस के बदले में अंगरेज़ी सरकार उन्हें हर साल छ लाख रुपये दिया करेगी।

समाप्त।

माधो राम भट्ट ने छाप कर प्रकाश किया।